Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024, R.N.I. No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

नई दिल्ली • वर्ष 25 • अंक 27 • 08 - 14 अप्रैल, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 06-04-2024 • पेज 12 • ₹ 10 रुपये

अपने मत की प्रशंसा करने वाले कहते हैं- अपने-अपने सांप्रदायिक अनुष्ठान में ही सिद्धि होती है, दूसरे प्रकार से नहीं होती।
- आचार्य श्री भिक्षु

भिन्नता होते हुए भी बनी रहे अभिन्नता : आचार्यश्री महाश्रमण

जैन शासन की श्वेतांबर परंपरा के मूर्ति पूजक, स्थानकवासी और तेरापंथ आम्नाय का हुआ त्रिवेणी संगम

पिंपरी चिंचवड़।
26 मार्च, 2024

जैन शासन की श्वेतांबर परंपरा का आज यह त्रिवेणी संगम है जहां मूर्ति पूजक आम्नाय, स्थानकवासी आम्नाय और तेरापंथ आम्नाय का संगम हो रहा है। तीन समुद्रों के संगम कोई देखने जाते होंगे, आज तो यहां देख लो त्रिवेणी पास-पास स्थित है।

उपरोक्त विचार परम पूज्य युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अपने मुख्य प्रवचन में समुपस्थित विशाल जनमेदिनी को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। पूज्यवर ने फरमाया कि जैन शासन से हम जुड़ें हुए हैं, जैन शासन में दो धाराएं हैं दिगम्बर परम्परा और श्वेतांबर परम्परा। कई बार दिगम्बर परम्परा के मुनियों आदि के साथ बैठने का काम पड़ता है, आज श्वेतांबर परम्परा की तीन धाराओं के संगम हो रहा है। हमारी श्वेतांबर परम्परा में वस्त्र स्वीकृत है।

हम सब एक हैं, एकता में भी सापेक्ष बात हैं। एक संदर्भ में एक हैं, यों देखे तो भिन्नता भी है। जहां मूर्तिपूजक मुनिजी के मुखवस्त्रिका नहीं है पर हमारे मुखवस्त्रिका है, ये वेशभूषा की भिन्नता है। स्थानकवासी आम्नाय के मुखवस्त्रिका है यानी स्थानक और तेरापंथी दोनों मुखवस्त्रिकाधारी आम्नाय होते हैं और वैसे देखा जाए तो हम स्थानकवासियों से ही आये हुए हैं। कहीं सिद्धान्तों की भिन्नता है तो कहीं आचार-क्रिया संबंधी भिन्नता होती है। ये भिन्नता होने पर भी अभिन्नता बनी रहे। एक सीमा तक जहां जैन शासन का प्रश्न है, जहां धर्म अध्यात्म का प्रश्न है, वहां एकता की बात भी हो सकती है।

सन् 2018 के चेन्नई प्रवास के एक प्रसंग का स्मरण करते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि हम चेन्नई में थे तब प्रवीण ऋषि जी महाराज के वहां गये थे, वहां दिगम्बर भी और भी कई आम्नाय के संतों ने मिलकर चिंतन गोष्ठी की थी। चेन्नई में जैन शासन की एक संगोष्ठी हो गई थी। ऐसे यदा कदा जैन शासन के आचार्य, साधु, साध्वियां आदि भी मिल जाते हैं। भिन्न-भिन्न देश में पैदा हुए भिन्न-भिन्न प्रकार के आहार से परिपुष्ट देह वाले जिन शासन को प्राप्त हो गए हैं, वे सभी मुनि भाई कहलाते हैं। ऐसे तो हर व्यक्ति के साथ मैत्री रखना चाहिए, वैर विरोध किसी से करना ही क्यों चाहिए? किसी से लड़ाई-झगड़ा न हो, मैत्रीपूर्ण व्यवहार हमारा रहना चाहिए। हम जैन शासन से जुड़े हुए हैं परस्पर हमारा सौहार्द और मैत्री का व्यवहार रहना चाहिए।

आज जो जैन शासन से जुड़ा हुआ 'जैनम् जयतु शासनम्' यह कार्यक्रम हो रहा है और श्वेतांबर परंपरा की त्रिवेणी संगम का प्रसंग बना है हम सभी खूब अच्छी साधना आराधना करते रहें। जैन शासन के भी और दूसरों के बीच जितनी आध्यात्मिक धार्मिक सेवा हमारे द्वारा हो सके, वह हम करने का प्रयास करें।

हमारा सुप्रीम कोर्ट है णमो आयरियाणं : उपाध्याय प्रवीण ऋषि जी

'जैनम् जयतु शासनम्' एक बहुत छोटा सा सूत्र है। दो शब्द हैं:- एक जैन धर्म है और एक जैन शासन।

धर्म है अहिंसा, संयम और तप। शासन है इसको प्रेक्टिकल करने की व्यवस्था। बिना प्रोटोकॉल के समाज नहीं बनता है। कैरेक्टर से व्यक्ति बनता है और प्रोटोकॉल से समाज बनता है और वही प्रोटोकॉल धर्म को शासन देता है। आचार्य को तीर्थंकर के समान कहा है। भारत देश में सत्ता को चुनौती देने का सामर्थ्य किसी में है तो वह सुप्रीम कोर्ट में है और यह प्रोटोकॉल देने की जिम्मेदारी जिसकी है वह णमो आयरियाणं की है। हमारा सुप्रीम कोर्ट तो णमो आयरियाणं हैं। मैंने आचार्य श्री को चेन्नई में यही निवेदन किया था की एक जैन की न्यूनतम आचार संहिता बने जो हर जैन के लिए कंपल्सरी होनी चाहिए। जहां प्रोटोकॉल चलता है, उसको शासन कहते हैं, जहां मर्जी चलती है उसे समाज कहते हैं।

अनुशासन आचार्य महाश्रमणजी के पास : मुनि पुण्यध्यान विजयजी

हमें धर्म की रक्षा करनी है। जैन शासन सभी के पास है पर अनुशासन आचार्य महाश्रमण जी के पास है। हमें हमारा समय शासन के लिए देना है। 'जैनम् जयतु शासनम्'- जैन सब एक हो गए ऐसा जब सुनूंगा तो मेरा काम सफल हो जाएगा।

मुनि जी ने अपनी बात इस पद्य के साथ समाप्त की-

कंकर तो बहुत होते हैं, शंकर तो एक ही होता है,
श्रमण तो बहुत होते हैं, महाश्रमण तो एक ही होता है।।

उपयोगी, हितकर और मार्गदर्शक बात को सुनना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

पुणे।
30 मार्च, 2024

पंच दिवसीय पुणे प्रवास का दूसरा दिन। अध्यात्म साधना के सुमेरू आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि आदमी सुनता है। जिन्हें श्रोत्रेन्द्रिय प्राप्त है और श्रोत्रेन्द्रिय सक्षम भी हैं तो आदमी कितनी चीजें सुन लेता है। प्रश्न है- क्या सुनना चाहिए? क्यों सुनना चाहिए? और कैसे सुनना चाहिए? इन तीन प्रश्नों का सही उत्तर मिल जाता है तो आदमी अच्छे ढंग से कार्य कर सकता है।

सुनने को संतों के प्रवचन, अच्छे भक्तिमय भजन, जीवन के बारे में, आत्मा के बारे में अनेक जानकारियां सुनने को मिल सकती है। वर्तमान में तो सुनने की सामग्री बहुत ज्यादा सुलभ हो गयी है। तकनीक के विकास से आज सुनना कितना आसान हो गया है। फालतू बातों को सुनने में हम समय न गंवाएं।

किशोरा अत्र विद्यंते, पूनाक्षेत्रे गरीयसि। धर्मध्यानम् सदा कुर्युः, भक्तिसंभृत चेतसः।।
गरिमापूर्ण पूना क्षेत्र में किशोर स्थित हैं। भक्ति युक्त चेतना वाले किशोर, सदा धर्म ध्यान करते रहें।

क्या सुनना चाहिए? हमारे लिए उपयोगी, हितकर, मार्गदर्शक हो, उस बात को हमें सुनना चाहिए। कोई दुःखी अपनी समस्या बताता है तो उसकी बात भी सुनकर उसे सहयोग देने का प्रयास करना चाहिए। सहयोग न भी दे सकें पर उसकी बात सुन लेने से भी उसको सम्बल मिल सकता है।

क्यों सुनना चाहिए? श्रोता और वक्ता दोनों के हित के लिए सुनना चाहिए। स्व-परहित संपादन के लिए सुनना चाहिए।

कैसे सुनना चाहिए? जैसे बोलने का अच्छा तरीका होता है वैसे सुनने का भी अच्छा तरीका हो सकता है। सुनने की भी कला होती है। सुनने की सुश्रुषा-इच्छा होनी चाहिए, तभी आदमी ध्यान से सुन सकता है। सुनने का प्रयत्न भी करना चाहिए। सुनने वाले ज्यादा संख्या में बैठे हो तो बिना कारण आपस में बातें नहीं करनी चाहिए, वरना काम की बातें सुनने से वंचित रह सकते हैं तथा दूसरों के भी अंतराय आ सकती है। मौन और धैर्य पूर्वक सामने वाले को सुनें। जो भी सुने वो ध्यान से सुनें और सुनने के बाद उसे ग्रहण करने का प्रयास करें। (शेष पृष्ठ 2 पर)

दुर्लभ मानव जीवन को उत्तम तरीके से जीएं : आचार्यश्री महाश्रमण

पुणे।
29 मार्च, 2024

भैक्षण गण के एकादशम् अधिनायक अपनी धवल सेना के साथ महाराष्ट्र के ऐतिहासिक नगर पुणे पधारे। आगमवाणी की अमृत रसधारा प्रवाहित कराते हुए परम पावन ने फरमाया कि जीवन में समय का बहुत महत्व होता है। समय हमें निःशुल्क मिलता है। जैसे मेघ सबके लिए बरसता है वैसे ही समय की वर्षा भी सबके लिए होती है।

शास्त्र में कहा गया है- क्षण को जानो। हम समय-अवसर का मूल्यांकन करें। हम मनुष्य हैं, मनुष्य होना भी अपने आप में एक विशेष बात है। क्योंकि मानुषत्व को दुर्लभ बताया गया है। जिसे दुर्लभ बताया गया है, वह हमारे लिए अभी उपलब्ध है। इस मानव जीवन में धर्म की प्राप्ति होना, धर्म को सुनने का मौका मिलना व धर्म की जानकारी हो जाना और अच्छी बात हो जाती है।

धर्म को प्राप्त कर भी जो आदमी धर्म को छोड़ देता है, भोगाकुल चित्त वाला रहता है, वह आदमी मानो अपने घर में पल्लवित कल्पवृक्ष को उखाड़ कर धतूरे के पौधे को पोषण देता है। धर्म अपने आप में कल्पवृक्ष, चिंतामणी रत्न है और कामधेनू है। मानव जीवन भी मानो चिंतामणि रत्न के समान है जिसमें धर्माराधना की जा सकती है। समय का अंकन हो। मानव जीवन का जो समय मिला है उसमें आदमी आत्म-कल्याण कर सकता है, साधना, आराधना कर सकता है। साधुत्व अपने आप में विशिष्ट है, श्रावकत्व भी बहुत बड़ी चीज है। प्रधानमंत्री के पद के सामने श्रावकत्व पद बहुत महत्वपूर्ण है। श्रावकत्व तो जीवन भर पाला जा सकता है। धर्म को पाकर जो छोड़ देता है वह अभागा आदमी है। धन तो यहीं रहने वाला होता है पर धर्म का प्रभाव आगे भी साथ जा सकता है। धन एक अपेक्षित तत्त्व है, पर वह साध्य नहीं, साधन है। गृहस्थ में रहकर भी धर्म रूपी कल्पवृक्ष को सिंचन दिया जाए। गृहस्थ व्यापार में व्यस्त हैं, पर धर्म को गौण नहीं करें। कहा गया है -

'आगे धन्धो, पाछै धन्धो, धन्धा माहि धन्धो।
धन्धा मांस्यू समय निकाले, वो साहिब को बन्दो।।'

धर्म दो प्रकार का हो जाता है। आत्मगत धर्म और व्यवहारगत धर्म। एक समय सापेक्ष धर्म है, एक समय निरपेक्ष धर्म है। ईमानदारी, सद्भावना और नशामुक्ति, आत्मगत-समय निरपेक्ष धर्म है। कर्म स्थान में भी धर्म हो। समय सापेक्ष उपासना धर्म भी अच्छा है। उपासना यर्थाथरूप में होती है तो हमें पूरा लाभ मिल सकता है। गृहस्थ समय निरपेक्ष धर्म भी रखने का प्रयास करें। दुकानदार ईमानदार हो, धोखाधड़ी न हो। चलते हुए भी अहिंसा धर्म हमारे साथ रहे। जिस प्रकार छाया साथ-साथ चलती है, उसी प्रकार धर्म भी मनुष्य के साथ रहे। कर्म-प्रवृत्ति के साथ धर्म जुड़ जाए, अध्यात्म, नैतिकता साथ में रहे। उत्तम मानव जीवन जो हमें प्राप्त है, उसे उत्तम तरीके से जीने की मंगलकामना रखें। धर्म के साथ जीने का प्रयास करें, दैनंदिन जीवन में धर्म साथ में रहे।

पूज्यप्रवर के स्वागत में ज्ञानशाला की सुन्दर प्रस्तुति हुई। स्थानीय सभा अध्यक्ष महावीर कटारिया, शांतिलाल मरलेचा, स्वागताध्यक्ष रतनलाल दुगड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेरापंथ समाज ने सामूहिक स्वागत गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

प्रथम पृष्ठ का शेष

उपयोगी, हितकर और...

सुनने से श्रोता भी अच्छा वक्ता बन सकता है। आदमी सुनकर कल्याण को जान लेता है। सुनकर अच्छी बात व पाप की बात को भी जान लेता है। अच्छा और बुरा दोनों को जानकर जो हितकर है उसका आचरण करना चाहिए और अहितकर से दूर रहना चाहिए। जीवन में कोई गलत बात आई हुई है, उसे छोड़ने का प्रयास करना चाहिए।

आधुनिक जो उपकरण हैं, वो गृहस्थों के लिए उपयोगी हो सकते हैं, उनका अनावश्यक उपयोग न हो। डिजिटल डिटॉक्स का प्रयोग करें। मोबाइल को रात्रि 12 बजे बाद नवकारसी करा दें। ड्रग्स रूपी जाल में न फंस जायें।

संतों की प्रेरणा से आदमी गलत मार्ग पर जाने से बच सकता है। सुनने से बहुत सी जानकारियां मिल सकती है। संतों से तीर्थंकरों की वाणी सुनने का प्रयास करें। गृहस्थ भी अच्छे प्रशिक्षक हो सकते हैं, उनसे भी ज्ञान लिया जा सकता है। अच्छी, सच्ची व हितकर बात कहीं से भी मिले उसे ग्रहण किया जाना चाहिए। आगम का जो ज्ञान हमने ग्रहण किया है उसे सिंचन मिलता रहे जिससे ज्ञान तरोताजा रह सकता है। गृहस्थ चौबीसी को कंठस्थ करने का प्रयास करें। इससे आध्यात्मिक विकास हो सकता है। कानों की शोभा कुंडल से हो सकती है पर ज्ञान की बात सुनने से उनकी शोभा अधिक होगी। कान भी पंचेन्द्रिय होने का द्योतक है। कान का अच्छा उपयोग हो।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी ने कहा कि हमारे जीवन में लक्ष्य का निर्धारण होना आवश्यक है। हमारा लक्ष्य ऊंचा हो, लक्ष्य ऐसा हो कि उससे लाभ ही लाभ हो, लक्ष्य ऐसा हो कि उसे पाने के बाद कुछ भी शेष न रहे।

ऐसा लक्ष्य परमार्थ का लक्ष्य हो सकता है। जो व्यक्ति परमार्थ के लक्ष्य को सामने रखकर चलता है वह मनुष्य अपनी उदय अवस्था को प्राप्त कर सकता है।

पूज्यवर के स्वागत में अणुव्रत समिति अध्यक्ष धर्मेन्द्र चोरड़िया, वर्धमान सांस्कृतिक केन्द्र के बालचन्द संचेती, मूर्ति पूजक समाज से अचलचन्द जैन ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेरापंथ किशोर मंडल ने अपनी सुन्दर प्रस्तुति दी। आचार्य प्रवर ने किशोरों को आशीर्वाद स्वरुप श्लोक प्रदान करवाया। तेरापंथ महिला मंडल एवं तेरापंथ प्रोफेशनल फॉरम ने भी अपनी प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मन की निर्मलता को बढ़ाने का आयास करें : आचार्य श्री महाश्रमण

खड़की।
28 मार्च, 2024

तीर्थंकर के प्रतिनिधि जगतोद्धारक परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी आज खड़की में पधारे। पूज्यवर ने पावन पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में शरीर और आत्मा ये दो तत्व हैं। इन दो तत्वों के योग से हमारे पास वाणी, मन, बुद्धि, पर्याप्ति, प्राण आदि अनेक चीजें हैं।

हमारी प्रवृत्ति के तीन साधन हैं- शरीर, वाणी और मन। व्यक्ति शरीर से अनेक कार्य करता है, वाणी से बोलता है और मन से चिंतन, स्मृति और कल्पना करता है। हमारा मन चंचल होता है। मन के कारण आदमी दुःखी भी बन सकता है और सुखी भी बन सकता है। मन के प्रमाद के कारण दुःख हो जाता है और मन वश में रहता है, तो दुःख भी नष्ट हो जाते हैं।

मन की दो कमियां है पहला कि मन चंचल रहता है और दूसरा कि कषाय-राग-द्वेष आदि भाव मन के साथ घुल मिल जाते हैं। चंचलता और कषायजन्य मलिनता, इन दोनों को हम जितना कम कर सकें वह हमारे आत्म उत्थान की दृष्टि से महत्वपूर्ण बात हो सकती है। मन तो हर समय चिंतन करता रहता है, चंचल रहता है। परन्तु चंचलता से भी ज्यादा खराब है मन की मलिनता। हम मन की चंचलता को कम करने और मन की निर्मलता को बढ़ाने का आयास करें।

आगम में कहा गया कि मन रूपी दुष्ट घोड़ा है जो दौड़ता रहता है। इस दुष्ट घोड़े को श्रुतरूपी लगाम से हम वश में रखने का प्रयास करें। योग-ध्यान से भी इसे वश में किया जा सकता है। हमारे यहां प्रेक्षाध्यान का प्रयोग चलता है, इससे मन की निर्मलता को बढ़ाया जा सकता है। शरीर की चंचलता कम होती है तो संभवतः मन की चंचलता भी कम हो सकती है। मन हमारा सुमन रहे, दुर्मन न रहे। मन का प्राप्त होना तो अपने आप में विकास का द्योतक है।

एकेन्द्रिय से लेकर चतुरिन्द्रिय तक एवं असंज्ञी पंचेन्द्रिय के मन नहीं होता। मन तो केवल संज्ञी पंचेन्द्रिय के ही होता है। ज्यादा पाप भी मन वाला प्राणी ही कर सकता है तो मन वाला ही ज्यादा धर्म कर सकता है। सातवीं नरक में मन वाला प्राणी ही जा सकता है और साधना करके मोक्ष भी मन वाला प्राणी अर्थात मनुष्य ही प्राप्त कर सकता है। (शेष पृष्ठ 11 पर)

अणुव्रत अमृत महोत्सव सम्पूर्ति समारोह

हैदराबाद।

अणुव्रत समिति हैदराबाद द्वारा अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्षों की संपूर्णता एवं अणुव्रत अमृत महोत्सव संपूर्ति के अवसर पर समापन समारोह का आयोजन लायंस भवन, पेराडाईज सर्किल, सिकंदराबाद में समिति अध्यक्ष प्रकाश एच भंडारी की अध्यक्षता में किया गया।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बाबुलाल बैद अध्यक्ष तेरापंथी सभा सिकंदराबाद उपस्थित थे। अणुव्रत समिति हैदराबाद के सदस्यों द्वारा अणुव्रत गीत के संगान व मंत्री रीटा सुराणा के अणुव्रत आचार संहिता के वाचन के साथ समारोह प्रारंभ हुआ। अणुव्रत समिति हैदराबाद के अध्यक्ष प्रकाश एच भंडारी ने अपने स्वागत वक्तव्य में पधारे हुए सभी महानुभावों व संस्थाओं के पदाधिकारियों का स्वागत व अभिनंदन किया। आपने आगे अणुव्रत आंदोलन की पृष्ठभूमि का विवरण देते हुए कहा हिरोशिमा व नागासाकी पर परमाणु बम के दुष्परिणाम व सन् 1947 के विभाजन की विभीषिका के परिणाम को देखते हुए गुरुदेव श्री तुलसी ने एक ऐसे मानव धर्म की कल्पना की जिसमें मानवीय मूल्यों की रक्षा के साथ सांप्रदायिक सौहार्द बनाया जा सके।

जहां आज हर तरफ मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है, वहीं अणुव्रत आंदोलन एक सूर्य किरण का कार्य कर रहा है।

अणुव्रत आंदोलन को प्रारंभ करने में बोलारम क्षेत्र, हैदराबाद का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पारस जैन व मिश्रीमल सुराणा एवं विजया सुराणा आंदोलन के मजबूत नींव के पत्थर हैं। मुख्य अतिथि बाबूलाल बैद ने कहा कि जहां आज हर तरफ मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है, वहीं अणुव्रत आंदोलन एक सूर्य किरण का कार्य कर रहा है। निवर्तमान अध्यक्ष विजय सुराणा, नीरज सुराणा व राजेन्द्र बोथरा ने अणुव्रत आंदोलन को सार्थक रुप प्रदान करने व इस आंदोलन को जन उपयोगी कार्यक्रम आयोजित करने के लिए सभी की सक्रिय भागीदारी के साथ अणुव्रत समिति को और अधिक सक्रियता से कार्य करने पर बल दिया।

इस अवसर पर अणुव्रत के कार्यक्रमों के प्रति समर्पित निष्ठावान कार्यकर्ता माणिक चंद रांका के साथ अतिथियों का सम्मान किया गया। अणुव्रत समिति हैदराबाद उपाध्यक्ष अनिल कातरेला ने धन्यवाद ज्ञापित किया। अणुव्रत अमृत महोत्सव समारोह के संयोजक व उपाध्यक्ष विजय आंचलिया ने कार्यक्रम का संचालन किया।

रंगों के त्यौहार होली पर विशेष कार्यक्रम आयोजित

जयपुर।

'शासन गौरव' बहुश्रुत साध्वीश्री कनकश्रीजी के पावन सान्निध्य में शासनमाता साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभाजी की द्वितीय वार्षिक पुण्यतिथि तथा रंगों का त्यौहार होली पर विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ। नमस्कार महामंत्र तथा 'ऊं हीं श्रीं क्लीं शासनमात्रे नमः' के सामूहिक मंत्रोच्चार से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

पवित्र और सुनहरे रंगों पर ध्यान करने से प्रशस्त भावधारा का निर्माण होता है

अणुविभा केन्द्र के महाप्रज्ञ सभागार में आयोजित गरिमामय कार्यक्रम को संबोधित करते हुए साध्वीश्री ने अपनी विनयांजलि समर्पित करते हुए कहा साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी तप, त्याग व समर्पण की मूरत थी। उनके व्यक्तित्व व कर्तृत्व की चमक विलक्षण थी।

उन्होंने कठोर तपस्या व अथक श्रम से जो सिद्धियां हासिल की वे युगों-युगों तक अमिट रहेंगी। उनकी निष्काम साधना की ही निष्पत्ति है कि वे अनेक पदों, संबोधनों से ऊपर उठकर शासनमाता बन गई।

महाप्राण आचार्यश्री तुलसी व शासनमाता में अनेक समानताओं को उजागर करते हुए साध्वीश्री ने उनकी साहित्यिक प्रतिभा व अवदानों की चर्चा की। महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी की अभिवंदना करते हुए साध्वीश्री ने कहा-आपने अमृत महोत्सव मना कर शासनमाता को जो सम्मान दिया वह महावीर की परंपरा का दुर्लभ दस्तावेज बन गया।

साध्वी कनकश्रीजी द्वारा विविध राग-रागिनियों में गुंफित गीत को प्रस्तुत करते हुए साध्वीश्री मधुलता जी, साध्वी मधुलेखाजी, साध्वी समितिप्रभाजी एवं साध्वी संस्कृति प्रभाजी ने शासनमाता के विविध जीवन प्रसंगों को समवेत स्वरों में प्रस्तुति की। महिला मंडल जयपुर शहर की बहनों ने भावपूर्ण गीतिका द्वारा आस्थसिक्त अभिव्यक्ति दी।

महिला मंडल अध्यक्षा नीरू मेहता, अणुव्रत समिति अध्यक्ष विमल गोलछा, तेरापंथ सभा उपाध्यक्ष सुरेश बरड़िया व वरिष्ठ कार्यकर्त्ता राजकुमार बरड़िया ने अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का सफल संयोजन साध्वी समितिप्रभाजी ने किया।

साध्वी मधुलताजी ने रंगों का त्योहार होली पर विशेष प्रवचन करते हुए कहा- प्रकृति से लेकर संस्कृति तक हमारी दुनिया बहुरंगी है। रंग हमारे बाहर और भीतर के व्यक्तित्व को प्रभावित और निर्मित करते हैं। पवित्र और सुनहरे रंगों पर ध्यान करने से प्रशस्त भावधारा का निर्माण होता है, लेश्याचक्र विशुद्ध होता है और आभामंडल प्रभावी बनता है। साध्वीश्री ने चैतन्य केन्द्रों पर नमस्कार महामंत्र के पांचों पदों के साथ रंगों का ध्यान कराया।

वीतराग पथ कार्यशाला से मिली वीतरागता की ओर बढ़ने की प्रेरणा

अहमदाबाद।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् अहमदाबाद द्वारा वीतराग पथ कार्यशाला का सफल आयोजन 'शासनश्री' साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, शाहीबाग, अहमदाबाद हुआ।

कार्यशाला के प्रथम चरण में सामूहिक सामायिक का आयोजन एवं कार्यशाला के द्वितीय चरण की शुभ शुरुआत कन्या मंडल के द्वारा मंगलाचरण से हुई। स्वागत वक्तव्य में तेयुप अध्यक्ष कपिल पोखरना ने उपस्थित युवा पीढ़ी को अध्यात्म की ओर बढ़ने की प्रेरणा दी। अपने मंगल उद्बोधन में साध्वी संवेगप्रभा जी ने आचार्य मघवागणी के जीवन वृतांत से सभी को वीतराग पथ के बारे में समझाते हुये उस पर चल कर मुमुक्ष बनने की प्रेरणा दी।

'शासनश्री' साध्वी सरस्वती जी ने आचार्यश्री महाश्रमण के बारें में रोचक जानकारी बताते हुए सभी को अध्यात्म के सहारे वीतरागता की ओर बढ़ने की प्रेरणा दी। ज्ञानशाला के बच्चों के द्वारा थावच्चा पुत्र, भिक्षु स्वामी और मुनि हेमराज जी के संवाद पर आधारित नाटिका बहुत ही मनमोहक ढंग से प्रस्तुत की गयी। कार्यशाला के लिये सहयोगी परिवार के रूप में बाबूलाल चेतनकुमार महावीरकुमार संकलेचा का सहयोग मिला। कार्यशाला में करीब 400 लोगों की उपस्थिति रही। सभी ने अभातेयुप की इस कार्यशाला की सराहना की और तेयुप अहमदाबाद को इतने वृहद् स्तर पर कार्यशाला आयोजित करने के लिए आभार प्रकट किया।

कार्यशाला का कुशल संचालन कोषाध्यक्ष वैभव कोठारी ने एवं आभार ज्ञापन संयोजक विपुल कोठारी ने किया। कार्यशाला को सफल बनाने में वैभव कोठारी, संयोजक भरत कोठारी एवं विपुल कोठारी का विशेष श्रम रहा। कार्यशाला का समापन साध्वीश्री के द्वारा मंगलपाठ से हुआ।

नारी जाति के लिए आदर्श बनी साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

बालोतरा। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल बालोतरा के तत्वावधान में शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी की द्वितीय वार्षिक पुण्यतिथि के अवसर पर जाप का कार्यक्रम न्यू तेरापंथ भवन में 'शासनश्री' साध्वी सत्यप्रभाजी ठाणा-4 के सानिध्य में संपादित हुआ। नमस्कार महामंत्र के संगान के बाद उपस्थित भाई-बहिनों एवं ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा 'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं शासनमात्रै नमः' का सामूहिक जाप किया गया।

इस अवसर पर 'शासनश्री' साध्वी सत्यप्रभा जी ने कहा कि साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी ने तेरापंथ धर्म संघ और नारी विकास के लिए खूब काम किया। उन्होंने साहित्य का निर्माण कर समाज को नयी प्रेरणा प्रदान की। नारियों को कुप्रथा के भंवर से निकालकर समाज के क्षेत्र में आगे लाने का अथक प्रयास किया। साध्वीवृंद द्वारा शासनमाता को समर्पित एक सामूहिक गीतिका प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर भाई-बहिनों ने एकासन तप, उपवास जमीकंद त्याग आदि विभिन्न त्याग प्रत्याख्यान भी किये। कार्यक्रम में अध्यक्ष निर्मला संकलेचा आदि पदाधिकारी, एवं श्रावक-श्राविका समाज की उपस्तिति थी। कार्यक्रम का संचालन मंत्री रेखा बालड़ ने किया। आभार ज्ञापन कोषाध्यक्ष पुष्पा सालेचा ने किया।

तेरापंथ महिला मंडल के विविध आयोजन

विले पार्ले

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार साध्वी राकेशकुमारी जी के सान्निध्य में विले पार्ले, मुंबई में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ किया गया। तत्पश्चात मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। महिला मंडल की अध्यक्षा रेखा कोठारी ने कुशल संचालन करते हुए महिला दिवस पर अपने विचार रखे, जिसमें उन्होंने वूमेंस डे तथा भारतीय संस्कृति में नारी के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किये। मंत्री अंकिता वडाला ने महिला मंडल की बहिनों के साथ केंद्र द्वारा प्रेषित बिंदुओं के आधार पर नारी शक्ति के विभिन्न रूपों को दर्शाते हुए, 'नारी, नारी का नहीं, देती आयी साथ, शायद उसका इसलिए, रिक्त रहा है हाथ' विषय पर सुंदर नाटिका प्रस्तुत की। सहमंत्री भावना डागलिया ने कविता के माध्यम से अपने विचार रखे। पुष्पा रामपुरिया को प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया गया। प्रेरणा सम्मान का वाचन हेमा कोठारी द्वारा किया गया। प्रेरणा सम्मान से सम्मानित पुष्पा रामपुरिया ने महिला मंडल का आभार व्यक्त करते हुए जीवन मे आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों को उतारने की प्रेरणा दी। साध्वी श्री ने कहा कि परिवार को संपन्न एवं आत्मनिर्भर बनाने में नारी लक्ष्मी का स्वरूप है, संतानों को संस्कारी और शिक्षित बनाने में सरस्वती का पात्र अदा करती है एवं समाज मे कुरीतियों को मिटाने में वह दुर्गा बनना भी मंजूर करती है। कार्यक्रम के अंत में अध्यक्षा रेखा कोठारी ने नारीलोक पत्रिका पढ़ने और ज्ञान चेतना प्रश्नोत्तरी भरने के लिए सभी को प्रोत्साहित किया।

मुलुंड

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित 'नाजुक सा रिश्ता ननद-भाभी का' कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ सभा भवन, मुलुंड में तेरापंथ महिला मंडल मुलुंड द्वारा किया गया। पुष्पा सिंघवी ने नमस्कार महामंत्र का उच्चारण किया। तेरापंथ महिला मंडल मुलुंड की बहनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया। अध्यक्षा निर्मला सिंघवी ने सभी बहनों का स्वागत किया एवं मुलुंड तेरापंथ महिला मंडल की नई कार्यकारिणी टीम की घोषणा की। कार्यशाला से संबंधित विषयवस्तु से सभी को अवगत कराया गया। ननद भाभी के बारे में अपने भावों का सुंदर चित्रण संभागी बहनों के समक्ष प्रस्तुत किया गया। कार्यशाला में ननद-भाभी की जोड़ियां ने बहुत ही उत्साह और उमंग के साथ भाग लिया। प्रतिभागी जोड़ियां ने कविता, नाटिका, हास्य-व्यंग्य एवम् संवाद के माध्यम से सुंदर और रोचक प्रस्तुति दी। निर्णायक की अहम् भुमिका कुसुम इंटोदिया व मधु चोरड़िया ने निभाई। जिसमें चयनित प्रथम पुष्पा बडाला-लीला चौरड़िया, द्वितीय अरुणा बांठिया-रेणुका कोठारी, तृतीय अल्पा पटवारी-वनीता पटवारी एवं शिल्पा मेहता को सम्मानित किया गया। कार्यशाला का संचालन डॉ. भारती पीपाड़ा ने किया। आभार ज्ञापन उपाध्यक्षा सुनीता सिंघवी ने किया।

नोखा

एम्पावरमेंट सेलिब्रेटिंग वूमनहुड का सफल आयोजन महिला मंडल द्वारा किया गया। प्रेरणा गीत से कार्यक्रम का आगाज किया। नुक्कड़ नाटक का सफल आयोजन हुआ। महिला मंडल अध्यक्ष सुमन मरोठी ने स्वागत करते हुए अपने विचार रखे। तेरापंथ महिला मंडल नोखा ने प्रेरणा सम्मान पुरस्कार चंचला देवी बैद को दिया गया। कार्यक्रम में 70 बहिनों की उपस्थिति रही।

नवरंगपुर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल नवरंगपुर द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। नमस्कार महामंत्र द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की गई। तत्पश्चात महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत की संगान किया गया। अध्यक्ष बॉबी जैन ने अतिथि डॉ. एम रोहिणी रानी एवं संध्या रानी आचार्य के बारे में जानकारी देते हुए सभी का स्वागत किया। उन्होंने बताया साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने संपूर्ण तेरापंथ का ही नहीं बल्कि संपूर्ण नारी जाति का भी आध्यात्मिक विकास किया है। उन्होंने तेरापंथ धर्म संघ का परचम पूरे विश्व में फहराया है। बॉबी जैन ने बताया कि औरत ठान ले तो सब कुछ कर सकती है बड़े से बड़े कामों में भी सफलता हासिल कर सकती है।

तारा देवी और सुशीला देवी ने दोनों अतिथियों सम्मान किया। महिला मंडल की बहनों द्वारा 'नारी एक रूप अनेक' विषय पर सुंदर नाटिका प्रस्तुत की गई।

राखी जैन और सुषमा देवी ने अपने विचार व्यक्त किये। गरिमा सुराणा ने गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन बिंदिया जैन ने किया। मंत्री रीना जैन ने आभार व्यक्त किया।

हैदराबाद

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद द्वारा अलग-अलग स्थानों पर नुक्कड़ नाटिका के द्वारा 'नारी एक रूप अनेक' विषय पर नुक्कड़ नाटिका प्रस्तुत की गई। कई बहनों व कन्या मंडल ने नुक्कड़ नाटिका में बहुत ही रोचक तरीक़े से नारी सशक्तिकरण के बारे में प्रकाश डालते हुए नारी के अनेक रूपों को दर्शाया। नारी चाहे बहन, बेटी, बहू, माँ, दादी, ऑफ़िसर, पॉलिटिशियन, डॉक्टर, एडवोकेट, नर्स, होम मेकर, पाइलट, इंजीनियर आदि कुछ भी हो वह घर परिवार के साथ-साथ अपनी सारी ज़िम्मेदारियों को बख़ूबी निभाती हैं। महिला मंडल अध्यक्ष कविता आच्छा ने सभी का स्वागत किया।

प्रचार-प्रसार मंत्री मीनाक्षी सुराणा का विशेष योगदान रहा।

नालासोपारा

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल नालासोपारा अध्यक्ष मानसी मेहता की अध्यक्षता में एवं मंत्री प्रवीणा खाब्या के कुशल मार्गदर्शन में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का अयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ उपासिका बहिनों ने नमस्कार महामंत्र के पाठ द्वारा किया।

महिला मंडल द्वारा प्रेरणा गीत की सुंदर प्रस्तुति दी गईं। संगठन मंत्री रंजना सोलंकी ने स्वागत वक्तव्य से सभी का स्वागत किया। महिला मंडल की बहिनों द्वारा 'नारी एक, रूप अनेक' विषय पर नुक्कड़ नाटिका गोकुल टावर सोसायटी के प्रांगण में प्रदर्शित की गयी जिसमें नारी शक्ति एवं नारी के सम्मान को दर्शाया गया। उपासिका लक्ष्मी मेहता एवं मंजू बाफना ने नारी शक्ति के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम का कुशल संचालन सीमा कोठारी ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री प्रवीणा खाब्या ने किया। महिला मंडल, कन्या मंडल से सराहनीय उपस्थिति एवं सहयोग प्राप्त हुआ।

प्रेरणा सम्मान व होली मिलन का कार्यक्रम

साउथ दिल्ली।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मण्डल दिल्ली साउथ ने प्रेरणा सम्मान व होली स्नेह मिलन का कार्यक्रम रखा। इस कार्यक्रम का आयोजन सी-15 ग्रीन पार्क में डॉ साध्वी कुंदनरेखा जी ठाणा-3 के सानिध्य में रखा गया।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की मुख्य न्यासी पुष्पा बैंगानी, संरक्षिका सायर बैंगानी, उपाध्यक्ष सुमन नाहटा, दिल्ली एवं उत्तर प्रदेश प्रभारी सुनीता जैन, अर्चना भंडारी और दिल्ली के अन्य मंडलों व संस्थाओं के अध्यक्ष उनकी टीम की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का शुभारम्भ साध्वीश्री जी ने नवकार महामंत्र एवं पैंसठिया छंद द्वारा किया। सुनीता जैन और सायर बैंगानी का मधुर व प्रेरणादायी वक्तव्य रहा। मंडल की बहिनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया गया। एम्पावरिंग वूमेनहुड का सन्देश लिए नारी के अनेक रूपों को दर्शाते हुए मण्डल की बहिनों ने 'नारी एक रूप अनेक' नाटक की प्रस्तुति दी। पुष्पा बैंगानी एवं के. एल. जैन ने ने अपने विचार व्यक्त किये।

साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि नारी में सहनशीलता का विकास हो, वाणी - संयम और मधुरता लिए हुए हो।

साध्वीश्री ने मुख्य अतिथि भाजपा की नई दिल्ली की प्रत्याशी बांसुरी स्वराज को सदा सरल, प्रामाणिक बने रहने की प्रेरणा दी। अध्यक्ष शिल्पा बैद ने बांसुरी स्वराज एवं अभातेममं के सदस्यों का अभिनंदन किया कर सोनाली जैन के व्यक्तित्व और कर्तृत्व का परिचय दिया। मुख्य अतिथि स्वराज ने प्रेरणा सम्मान के लिए चयनित सुमेरमल जैन पब्लिक स्कूल की वाइस चेयरपर्सन सोनाली जैन को प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया। स्वराज ने कहा कि साध्वीश्री के सानिध्य मैं आ कर उन्हें शांति की अनुभूति हुई और लगा मानो आत्मा का स्नान हो गया है।

साध्वीश्री द्वारा बताई गई बातें वे सदा याद रखेंगी और उनका अनुसरण करेंगी। नारी सशक्तिकरण पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि देश का विकास नारी के विकास के बिना संभव नहीं है। महिला मोर्चा की प्रदेश महामंत्री सरिता तोमर का भी मंडल ने सम्मान किया। सोनाली जैन ने अपने भावों को प्रकट करते हुए कहा कि अपने ही समाज और परिवार से सम्मान पाना बहुत विशेष होता है। यह सम्मान ना सिर्फ़ उन्हें ज़िम्मेदारियों का अहसास दिलाता है अपितु शिक्षा और नारी सशक्तिकरण के क्षेत्र में और आगे बढ़ने का प्रोत्साहन देता है।

कार्यक्रम का सुंदर संचालन उपाध्यक्ष माया दुगड़ ने किया। वर्षा बैंगानी ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में लगभग 90 बहनों की उपस्थिति रही। दूसरे चरण में होली स्नेह मिलन का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

संक्षिप्त खबर

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला के अंतर्गत 'यूथ टूवर्ड जैनिस्म' कार्यक्रम

अमराईवाड़ी। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद अमराईवाड़ी द्वारा व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'यूथ टूवर्ड जैनिज़्म' का सफल आयोजन संत भवन अमराईवाड़ी में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के द्वारा की गई । तेरापंथ युवक परिषद अमराईवाड़ी का संक्षिप्त परिचय तेयुप, अमराईवाड़ी के मंत्री सुनील चिप्पड़ ने दिया। स्वागत वक्तव्य तेयुप अध्यक्ष हितेश चपलोत ने दिया। कार्यक्रम में पधारे मोटिवेशनल स्पीकर अनिल सेठिया का परिचय ज्योति डांगी ने दिया। स्पीकर अनिल सेठिया ने बहुत ही शानदार तरीके से जैन धर्म का जीवन और जीवन शैली में महत्त्व एवं भगवान महावीर के सिद्धांत प्रमोद भावना, मैत्री भावना, करुणा भावना एवं उपेक्षा भावना के बारे में बहुत ही सरल भाषा में विस्तार से समझाया। अनेकांतवाद का सिद्धांत प्रायोगिक प्रशिक्षण द्वारा समझाने का प्रयास किया। पदाधिकारियों द्वारा मुख्य वक्ता अनिल सेठिया का सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन जयेश सिंघवी ने एवं कार्यक्रम का कुशल संचालन मुकेश सिंघवी ने किया।

शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की द्वितीय पुण्यतिथि पर आयोजन

चित्रदुर्गा। साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा भवन, चित्रदुर्गा में होली चातुर्मास व शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की द्वितीय पुण्यतिथि के कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। साध्वी संयमलता जी ने कहा कि साध्वीप्रमुखाश्री का चिंतन और प्रशासन, लेखनी और वक्तृत्व शैली, साधना और संयमशीलता, मानो एक व्यक्ति में अनेक विशेषताओं का दुर्लभ समवाय था। आज वह विराट व्यक्तित्व हमारे मध्य नहीं है, हम उनके वात्सल्य, प्रेरणा और प्रोत्साहन से अपने आप को वंचित अनुभव कर रहे हैं। साध्वी माधवयशाजी, साध्वी मनीषाप्रभा जी, साध्वी रौनकप्रभा जी ने शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के वात्सल्य एवं उनके संदर्भों को स्मरण करते हुए अपनी भावांजलि अर्पित की।

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला "घर बने स्वर्ग" का भव्य आयोजन

अहमदाबाद । अखिल तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, अहमदाबाद द्वारा लायन्स इंटरनेशनल के साथ मिलकर व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'घर बने स्वर्ग' का भव्य आयोजन सरदार पटेल स्मारक, शाहीबाग, अहमदाबाद में हुआ। आनंद बोथरा द्वारा विजय गीत की प्रस्तुति दी गयी। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अभातेयुप के राष्ट्रीय सहमंत्री प्रथम भूपेश कोठारी ने किया। सुप्रसिद्ध लाइफ मैनेजमेंट कोच परीक्षित जोबनपुत्र ने आज के इस आधुनिक युग में अपने आप को बदल कर परिवारजनों, बच्चों, दोस्तों से अपने संबंधों को बेहतर बनाने के गुर सिखाये। उन्होंने कहा कि जैसे एक माली अपने बगीचे को सींचता है वैसे ही हम सबको अपने परिवार को सींचना है परंतु उसका मालिक नहीं बनना है। आपने अच्छे पैरेंट्स बनने, सबंधों को निभाने, परिवार को खुशहाल रखने के साथ जीवन में लक्ष्य बनाकर कार्य करने आदि अनेक विषयों पर कार्यशाला में उपस्थित संभागियों को संबोधित किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में अहमदाबाद शहर की मेयर प्रतिभा जैन की उपस्थिति रही। कार्यशाला को सफल बनाने में श्रद्धा की प्रतिमूर्ति बालदेवी धुपिया - श्रद्धानिष्ठ श्रावक मदनलाल धुपिया परिवार का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यशाला में लगभग 600 संभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला का कुशल संचालन कुलदीप नवलखा एवं अतुल सिंघवी ने किया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ **सूरत।** पड़िहारा निवासी सूरत प्रवासी रणजीतसिंह सुराणा के सुपुत्र अमित-पिंकी सुराणा की सुपुत्री का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीषकुमार मालू, बजरंग बैद ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से सानंद संम्पन करवाया। संस्कारक मनीषकुमार मालू ने नामकरण पत्रक का वाचन करते हुए नवजात शिशु का नाम 'क्रिशा' घोषित किया।

सिरियारी से संतों का मंगल प्रस्थान

सिरियारी।

कहा गया है कि संतों का प्रवास भी मंगल होता है व संतों का प्रस्थान भी मंगल होता है। 15 मास से कुछ अधिक का प्रवास सानन्द सम्पन्न कर मुनि आकाशकुमार जी व मुनि हितेन्द्रकुमार जी ने तथा मुनि रोहित कुमारजी व मुनि विनीत कुमारजी ने भी अहमदाबाद की ओर मंगल विहार किया।

'शासनश्री' मुनि मणिलालजी एवं 'शासनश्री' मुनि मुनिव्रतजी स्वामी के सान्निध्य में आयोजित मंगलभावना कार्यक्रम में मुनि धर्मेशकुमार जी, मुनि जय कुमारजी, मुनि गिरीश कुमारजी, मुनि मुदित कुमारजी ने चारों संतों के प्रति मंगल कामना व्यक्त की।

मुनिश्री मणिलालजी ने चारों संतों को खूब आशीर्वाद देते हुए कहा की इन्होंने मेरी खूब सेवा की व चित्त समाधि उपजाई। मुनिश्री ने आगे कहा कि दोनों संतों ने सिरियारी में खूब ठाठ लगाया- ओम भिक्षु का जाप, मासिक तेरस पर भक्ति संध्या, 12 व्रत, अणुव्रत के विविध आयोजन, स्कूलों में कार्यक्रम, नशा मुक्ति रैली, कला प्रदर्शनी, आदि अनेक उपक्रम प्रारंभ किये।

मुनि विनीत कुमार जी ने चारों संतों की ओर से अपनी विचाराभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि गिरीश कुमारजी ने किया।

कार्यक्रम में सिरियारी संस्थान के उपाध्यक्ष उत्तम सुकलेचा व मैनेजर महावीर जैन ने चारों संतों को भावभीनी विदाई देते हुए आगामी यात्रा की मंगल कामना व्यक्त की।

'श्रावक जीवन की शोभा' पर कार्यशाला

भाग्यशाली को मिलता है श्रावक जीवन

पड़िहारा।

'शासनश्री' मुनि विजय कुमार जी के जीवन के 75वें वर्ष प्रवेश के उपलक्ष्य में 'श्रावक जीवन की शोभा' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

मुनिश्री ने इस अवसर पर श्रावक-श्राविकाओं को संबोधित करते हुए कहा- श्रावक का जीवन भाग्यशाली को मिलता है। पूर्व जन्म के किए हुए सुकृत् का उपहार इसे कहा जा सकता है।

इस जीवन की शोभा कैसे बढ़े, यह हर श्रावक के लिए मननीय है। जीवन तो नास्तिक-आस्तिक, पापी-धर्मी सभी जीते हैं, किंतु श्रावक का जीवन कुछ विशिष्ट होता है। वह धर्म को अपना मित्र बनाकर चलता है, कभी उसका साथ नहीं छोड़ता। श्रावक जीवन की भी एक आचार संहिता बनी हुई है, उसका यथाशक्य पालन होना चाहिए। व्यवहार में जैन संस्कृति की झलक दिखाई देनी चाहिए।

स्वीकृत तत्त्व के प्रति गहरी आस्था होनी चाहिए, जैन धर्म व तेरापंथ का प्रारंभिक ज्ञान सभी को करना चाहिए। प्रतिदिन धार्मिक उपासना में एक निश्चित समय का सदुपयोग जरूरी है। परिवार के सभी सदस्य सायंकालीन सामूहिक प्रार्थना या अर्हत् वंदना जैसा कोई उपक्रम चलाएं।

श्रावक जीवन की सबसे बड़ी शोभा है, व्यसन मुक्ति। प्राचीन युग में सात व्यसनों का उल्लेख आता था, किन्तु आधुनिक युग में व्यसनों के नए-नए रूप सामने आ रहे हैं। श्रावकों को व्यसनों के दलदल से सदा दूर ही रहना चाहिए।

किसी ने सही कहा है, हर दुर्व्यसन पहले मेहमान बनकर आता है, कुछ समय किराएदार की तरह रहता है और फिर मालिक बनने की कोशिश करता है। एक दिन आपको नौकर बनाकर अपने ढंग से नाच नचाता है। शरीरिक, मानसिक व बौद्धिक स्वास्थ्य के लिए भी व्यसनमुक्ति अनिवार्य है। कार्यक्रम की संपन्नता पर उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने त्याग प्रत्याख्यान किये।

कार्यक्रम की शुरुआत पड़िहारा महिला मंडल के मंगल संगान के साथ हुई। सभा अध्यक्ष पन्नालाल दूगड़, विनोद भंसाली, अशोक बैद आदि ने अपनी प्रस्तुति दी।

संबोधि

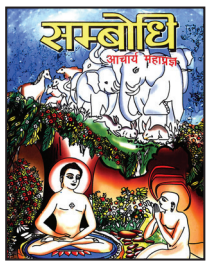

साध्य-साधन-संज्ञान

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

तैजस शरीर तापमय शरीर है। यह हमारी उष्मा, सक्रियता और शक्ति का संचालक है। यह न हो तो उष्मा पैदा नहीं हो सकती, पाचन नहीं हो सकता, रक्त का संचार नहीं हो सकता। यह तैजस शरीर ही हमारी स्थूल शरीर की सारी क्रियाओं (संरचनाओं) का संचालन करता है। स्थूल शरीर में शक्ति का सबसे बड़ा भंडार है–तैजस शरीर। जिसका तैजस शरीर मंद है–अग्नि मंद है, उसकी सारी क्रियाएं मंद हो जाती हैं। अग्नि तीव्र है तो सारी क्रियाएं तीव्र हो जाती हैं।

तैजस शरीर के दो कार्य हैं -

१. शरीर–तंत्र का संचालन।

२. अनुग्रह और निग्रह का सामर्थ्य ।

मेघः प्राह

१४. भगवन्! इन्द्रियग्रामं, चंचलं विद्यते भृशम्।
संयमः कथमाधेयः, तात्पर्यं तस्य साधय॥

मेघ बोला–भगवन्! इन्द्रिय–समूह बहुत चंचल है। उसे संयत कैसे किया जाए? आप उसका तात्पर्य मुझे समझाएं।

मनुष्य को प्रकृति ने दिव्य देह, दिव्य इन्द्रियां, दिव्य मन, दिव्य बुद्धि और दिव्य चेतना प्रदान की है। आश्चर्य होता है फिर वह दुःखी क्यों है? लगता है वह अपनी दिव्य शक्ति का सम्यक् उपयोग नहीं कर रहा है। इसका कारण वह स्वयं तो है ही किन्तु इसके साथ–साथ उसके पूर्वोपार्जित संस्कार कर्म भी है। वह नहीं चाहते हुए भी संस्कारों के कारण गलत दिशा में धकेल दिया जाता है। न उसका मन पर नियंत्रण है और न इन्द्रियों पर। मन और इन्द्रियों को उत्तेजित करने वाले बाह्य साधन भी उसे वैसे ही उपलब्ध हो जाते हैं, जिससे वह सहज ही गलत दिशा में जाने को विवश हो जाता है।

इसका मुख्य कारण है इन्द्रियां, मन, बुद्धि व शरीर आदि अपने स्वामी के सम्मुख नहीं है। अपने मालिक के साथ उनका जो संबंध या बोध होना चाहिए वह नहीं है। धर्म-अध्यात्म की प्रक्रिया उसे अपने स्वामी की दिशा में मोड़ने के लिए है। जिस दिन स्वामित्व का बोध होता है चंचलता की समस्या समाहित हो जाती है। जो–जो प्रयोग निर्दिष्ट हैं उनका लक्ष्य भी आवरणों–मलों को क्षीण कर सत्य तत्त्व से परिचित कराना है। मेघ ने जो प्रश्न खड़ा किया है उसका समाधान विविध प्रयोगों में निहित है ।

भगवान् प्राह

१५. बाध्यमानो ग्राम्यधर्मैः, रूक्षं भुञ्जीत भोजनम्।
प्रकुर्यादवमौदयं, ऊर्ध्वस्थानं स्थितो भवेत्॥

भगवान् ने कहा– मुनि ग्राम्य–धर्म–काम–विकार से पीड़ित होने पर रूक्ष भोजन करे, अवमौदर्य मात्रा में कम खाए और ऊर्ध्वस्थान–कायोत्सर्ग करे ।

१६. नैकत्र निवसेन्नित्यं, ग्रामं ग्राममनुव्रजेत्।
व्युच्छेदं भोजनस्याऽपि, कुर्यात् रागनिवृत्तये॥

मुनि सदा एक स्थान में निवास न करे, गांव–गांव में विहार करे और राग की निवृत्ति के लिए भोजन को भी छोड़े ।

काम–वासना मनुष्य की मौलिकवृत्ति है, ऐसा मनोवैज्ञानिकों का कहना है। 'काम' ऊर्जा है। एक शक्ति है, किंतु उसके प्रयोग भिन्न–भिन्न हो सकते हैं। मनोवैज्ञानिक इसे विराट् शक्ति कहते हैं और वे कहते हैं कि इससे पार नहीं हुआ जा सकता। इसमें काफी सच्चाई है। बहुत कम व्यक्ति ही इस विराट् ऊर्जा को बचा सकते हैं। इसलिए साधना मार्ग को दुरूह, दुर्धर्ष कहा गया।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

पुरुषार्थ का प्रदीप

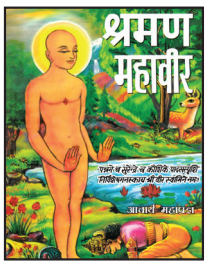

स्वतंत्रता की शाश्वत ज्योति पर पड़ी हुई भस्मराशि को दूर करने के लिए महावीर अब आगे बढ़े। उन्होंने अपने साथ आए हुए सब लोगों को विसर्जित कर दिया।

इस प्रसंग में मुझे राम के वनवास-गमन की घटना की स्मृति हो रही है। दोनों घटनाओं में पूर्ण सदृशता नहीं है, फिर भी अभिन्नता के अंश पर्याप्त हैं।

राम घर को छोड़ अज्ञात की ओर चले जा रहे हैं। उनके साथ लक्ष्मण है, सीता है और धनुष है। महावीर भी घर को छोड़ अज्ञात की ओर चले जा रहे हैं। उनके साथ न कोई पुरुष है, न कोई स्त्री है और न कोई शस्त्र। दोनों के सामने लक्ष्य है– स्वतंत्रता की दिशा को आलोक से भर देना। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए दोनों ने युद्ध किए हैं और शत्रु–वर्ग का दमन किया है। युद्ध और दमन की भूमिका दोनों की भिन्न है। राम के शत्रु हैं– भद्र मनुष्यों की स्वतंत्रता का अपहरण करने वाले दस्यु और महावीर के शत्रु हैं– आत्मा की स्वतंत्रता का अपहरण करने वाले संस्कार। राम ने उनका दमन किया धनुष से और महावीर ने उनका दमन किया ध्यान और तपस्या से। राम कर्मवीर हैं और महावीर धर्मवीर हैं।

ये दोनों भारतीय संस्कृति के महारथ के ऐसे दो चक्र हैं, जिनसे उसे निरन्तर गति मिली है और मिल सकती है।

महावीर अपनी जन्मभूमि से प्रस्थान कर कर्मारग्राम (वर्तमान कामनछपरा) पहुंचे। उन्हें खाने-पीने की कोई चिन्ता नहीं थी। दीक्षा स्वीकार के प्रथम दिन वे उपवासी थे और आज दीक्षा के प्रथम दिन भी वे उपवासी हैं। स्थान के प्रति उनकी कोई भी आसक्ति नहीं है। सुख-सुविधा के लिए कोई आकर्षण नहीं है। उनके सामने एक ही प्रश्न है और वह है परतंत्रता के निदान के खोज।

महावीर गांव के बाहर जंगल के एक पार्श्व में खड़े हैं। वे ध्यान में लीन हैं। उनके चक्षु नासाग्र पर टिके हुए हैं। दोनों हाथ घुटनों की ओर झुके हुए हैं। उनकी स्थिरता को देख दूर से आने वालों को स्तम्भ की अवस्थिति का प्रतिभास हो रहा है।

एक ग्वाला अपने बैलों के साथ गांव को लौट रहा था। उसने महावीर को जंगल में खड़े हुए देखा। उसने बैल वहीं छोड़ दिए। वह अपने घर चला गया। महावीर सत्य की खोज में खोए हुए थे। वे अन्तर जगत् में इतने तन्मय थे कि उन्हें बाहर की घटना का कोई आभास ही नहीं हुआ। बैल चरते-चरते जंगल में आगे चले गए। ग्वाला घर का काम निपटाकर वापस आया। उसने देखा वहां बैल नहीं है। उसने पूछा, 'मेरे बैल कहां हैं?'

महावीर ने इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। वे अपने अन्तर् के प्रश्नों का उत्तर देने में इतने लीन थे कि उन्होंने ग्वाले का प्रश्न सुना ही नहीं, फिर उत्तर कैसे देते? ग्वाले ने सोचा, इन्हें बैलों का पता नहीं है। वह उन्हें खोजने के लिए जंगल की ओर चल पड़ा। सूरज पश्चिम की घाटियों के पार पहुंच चुका था। रात ने अपनी विशाल बाहें फैला दीं। तमस् ने भूमि के मुंह पर श्यामल घूंघट डाल दिया। ग्वाला बैलों को खोजता रहा, पर उनका कोई पता नहीं चला। वह अपने खेत में चला गया।

प्रकाश ने फिर तमस् को चुनौती दी। सूर्य उसकी सहायता के लिए आ खड़ा हुआ। दिन ने उसकी अगवानी में सारे द्वार खोल दिए। तमस् के साथ-साथ नींद का भी आसन डोल उठा। ग्वाला जागा। वह नित्यकर्म किए बिना ही बैलों की खोज में निकल गया। वह घूमता-घूमता फिर वहीं पहुंचा, जहां महावीर ध्यान की मुद्रा में गिरिराज की भांति अप्रकम्प खड़े हैं। उसने देखा-बैल महावीर के आस-पास चर रहे हैं। रात की थकान, असफलता और महावीर के आस-पास बैलों की उपस्थिति ने उसके मन में क्रोध की आग सुलगा दी। उसके मन का संदेह इस कल्पना के तट पर पहुंच गया कि ये मुनि बैलों को हथियाना चाहते हैं। इसलिए मेरे पूछने पर ये मौन रहे। उनके बारे में मुझे कुछ भी नहीं बताया।

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

इन्द्रियविजय और समाधिमरण का प्रयोग

3. प्रायोपगमन अनशन। यह सर्वश्रेष्ठ अनशन है, उच्चतम है। इस अनशन में अवस्थित साधक समूचे शरीर के अकड़ जाने पर भी अपने स्थान से चलित नहीं होता। इसमें भक्त-प्रत्याख्यान और इंगिणी मरण अनशन का आचार तो है ही, सर्वथा निश्चल रहना इसकी विशेष साधना है। इस अनशन में अवस्थित साधक शरीर का सब प्रकार से विसर्जन कर देता है। परीषह उत्पन्न होने पर उसके लिए भावनीय होता है- **'ण रें देहे परीसहा।'** यह शरीर ही मेरा नहीं है तब मुझे परीषह कहां होगा?

अनशन और आत्महत्या

यावत्कथिक अनशन और आत्महत्या में इतनी समानता है कि गाहे- अनचाहे, विलम्बित या अविलम्बित दोनों की निष्पत्ति है शरीर का मन्त। अन्तर यह है कि अनशन शान्त भाव से, आत्म कल्याण के द्वेश्य से, आर्तध्यान से मुक्त अवस्था में प्रसन्नतापूर्वक किया जाने वाला आहार का परिहार है। इसका अनुष्ठाता साधक जीवन-मरण की आशा से विप्रमुक्त होकर आत्मलीनता का अभ्यास करता है। उससे आत्मशुद्धि होती है। आत्महत्या साधारणतया निराशा, कुण्ठा, तनाव और आवेशवश की जाती है। यदि निराशा, आवेश आदि कारणों से प्रेरित होकर अनशन स्वीकार किया जाए तो मेरी दृष्टि से वह आत्महत्या का भाई ही कहलाएगा।

खाद्यसंयम का प्रयोग

'अनशन' निश्चित ही स्पृहणीय, करणीय और अनुमोदनीय तप है। उपवास, बेला (दो दिन का उपवास), तेला (तीन दिन का उपवास) आदि तपस्याएं उसके अंतर्गत हैं। आवण-भाद्रव मास में जैन लोग विशेष रूप से तपस्या का प्रयोग करते हैं। यथाशक्ति, यथास्थिति वह होना भी चाहिए। कुछ लोग शारीरिक दौर्बल्य अथवा अन्य करणीय कार्यों की व्यस्तता के कारण प्रायः तपस्या नहीं कर सकते, उन्हें निरुत्साह होने को जरूरत नहीं। उन्हें 'ऊनोदरी' पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

निर्जरा के बारह भेदों में दूसरा भेद है ऊनोदरी। उसे ऊनोदरिका, अवमौदर्यं अथवा अवमोदरिका भी कहा जाता है। 'ऊन' का अर्थ न्यून, कम। उदर का अर्थ है पेट। उदर को ऊन रखना, खाने में कमी करना ऊनोदरी तप है। ऊनोदरी का यही अर्थ अधिक प्रचलित एवं प्रसिद्ध है। आगमों को पढ़ने से ज्ञात होता है कि ऊनोदरी का अर्थ व्यापक है। वहां ऊनोदरी के दो प्रकार बतलाए गए हैं-

1. द्रव्य अवमोदरिका

2. भाव अवमोदरिका।

अवमोदरिका का तात्पर्य है अल्पीकरण अथवा संयम। द्रव्य अवमोदरिका का अर्थ है उपभोग-परिभोग में प्रयुक्त होने वाले द्रव्यों-भौतिक पदार्थों का संयम करना। भाव अवमोदरिका का सम्बन्ध हमारे अंतर्जगत् से है, भावों (इमोशन्स्) से है, निषेधात्मक भावों (नेगेटिव एटिट्यूडस्) के नियन्त्रण से है।

द्रव्य अवमोदरिका के भी दो प्रकार हैं-

1. उपकरण द्रव्य अवमोदरिका

2. भक्तपान द्रव्य अवमोदरिका

वस्त्र, पात्र आदि उपकरणों का संयम करना उपकरण द्रव्य अवमोदरिका एवं खान-पान में संयम करना भक्तपान द्रव्य अवमोदरिका है।

यह अवमोदरिका जहां जैन तपोयोग का एक अंग है वहीं अनेक व्यावहारिक समस्याओं का समाधान भी है। कुछ लोग अनावश्यक खाते हैं, मौज उड़ाते हैं और बीमारियों को अपने घर (शरीर) में लाकर रहने के लिए निमन्त्रण देते हैं। कुछ लोग ऐसे हैं जिन्हें क्षुधाशांति के लिए पर्याप्त खाद्य सामग्री भी नहीं मिलती है। वे कष्ट का जीवन जीते हैं। अति भाव और अभाव की इस विषम स्थिति में संतुलन हो जाए तो दोनों ओर की समस्या का समाधान हो सकता है। इसी प्रकार वस्त्र, मकान, यान-वाहन आदि की बहुलता और अभाव की विषम स्थितियां हैं। उनके समीकरण में ऊनोदरी का सिद्धांत प्रकाश स्तम्भ के रूप में हमारे सामने है। उसको युक्ति-युक्त समझना, समझाना अपेक्षित है। लड़का भरपेट भोजन कर उठा ही था कि मित्र के घर से प्रीतिभोज में भाग लेने के लिए निमन्त्रण मिला। वह अपने वृद्ध पिता के पास जाकर बोला

ऊर्ध्व गच्छन्ति नोद्गाराः, नाधो गच्छन्ति वायवः।
निमन्त्रणं समायातं, तात! ब्रूहि करोमि किम्?।।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री भारीमालजी युग

मुनिश्री अमीचन्दजी (गलूंड) दीक्षा क्रमांक : 75

मुनिश्री उच्चकोटि के साधक थे। उन्होंने उपवास से दस दिन का चौविहार लड़ीबद्ध तप किया। सेलड़ी की वस्तु (जिसमें गुड़, चीनी, शक्कर अदि मिले) का आजीवन त्याग कर दिया। शीतकाल में बहुत शीत सहन किया और ग्रीष्मकाल में आतापना ली। विविध अभिग्रह, कायोत्सर्ग तथा ध्यान-स्वाध्याय आदि द्वारा संयमी जीवन को तपे हुए सोने की तरह चमकाया।

– साभार: शासन समुद्र –

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार केवल पीडीएफ फॉर्मेट में इस मेल एड्रेस **abtyptt@gmail.com** पर ही भेजें।

निवेदक
अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

संक्षिप्त खबर

सम्यक् दर्शन कार्यशाला के प्रमाण पत्र वितरित

पर्वत पाटीया। मुनि उदितकुमार जी एवं मुनि पारसकुमार जी के सान्निध्य में सम्यक् दर्शन कार्यशाला के प्रमाण पत्र वितरित किये गये। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् व समण संस्कृति संकाय के तत्वावधान में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की अनुपम कृति 'शरीर और आत्मा' पर आधारित सम्यक् दर्शन कार्यशाला की परीक्षा 10 सितम्बर 2023 को पूरे भारत व विदेश के 221 क्षेत्रों में आयोजित हुयी। इस परीक्षा में पर्वत पाटीया से 44 परिक्षार्थियों ने भाग लिया जिसमें सुमन देवी बैद ने पूरे भारतवर्ष में 19वां स्थान प्राप्त किया। मुनिश्री ने कहा कि ऐसी कार्यशालाओं में अधिक से अधिक अभ्यर्थी भाग लें। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के नवनियुक्त कार्यकारिणी सदस्य व सभा मंत्री प्रदीप गंग, कार्यशाला के मुख्य प्रायोजक सम्पत लाल कोठारी, तेयुप निर्वतमान अध्यक्ष प्रदीप पुगलिया व कार्यशाला के संयोजक पंकज बुच्चा के द्वारा परिक्षार्थियों को प्रमाण पत्र वितरण कराए गए। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री पवन कुमार बुच्चा ने किया। तेयुप मंत्री ने सभी परीक्षार्थियों को बधाई देते हुए मुनिश्री के प्रति अनन्त-अनन्त कृतज्ञता ज्ञापित की।

कैंसर जागरूकता अभियान का द्वितीय कैंप

गांधीनगर, बेंगलुरु। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल बेंगलुरु गांधीनगर के तत्वावधान में कैंसर जागरूकता अभियान के तहत दूसरे कैंप का आयोजन हिमांशु ज्योति कला पीठ कॉलेज में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रेरणा गीत के संगान से हुआ। उपाध्यक्ष लता गादिया ने सभी का स्वागत करते हुए वर्ष भर चलने वाले कैंसर जागरूकता अभियान की जानकारी दी। मुख्य वक्ता डॉक्टर पूनम मौर्या ने कैंसर के लक्षण एवं सावधानियों के बारे में जानकारी दी। आपने कहा कि सबसे बड़ा इलाज डर को हटाना है। निरामय संस्था के सहयोग से निशुल्क थर्मल स्क्रीनिंग के द्वारा लगभग 100 बहनों की जांच की गई। स्कूल के डायरेक्टर विजय कुमार ने मंडल के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि भविष्य में भी ऐसे जागरूकता कैंप लगने चाहिए ताकि लोग इस बीमारी को समझें और इससे घबराए नहीं और इसका इलाज वक्त रहते करवा ले। प्रोफेसर दिव्या ने भी अपने विचार व्यक्त किये। डॉ. पूनम मौर्या का परिचय सह संयोजिका अनीता नाहर ने दिया। इस कैंप हेतु आर्थिक सहयोग महेंद्र सरला श्रीमाल परिवार ने किया। कार्यक्रम का सफल संचालन मंत्री ज्योति संचेती ने किया व आभार ज्ञापन पिंकी खाबिया ने किया।

गुरु दर्शन यात्रा सानंद सम्पन्न

नालासोपारा, मुंबई। तेयुप नालासोपारा द्वारा अध्यक्ष मुकेश मेहता एवं मंत्री जितेश हिरण के मार्गदर्शन में तेयुप की एक दिवसीय गुरु दर्शन यात्रा का आयोजन किया गया। जैन संस्कारक रमेश ढालावत द्वारा नमस्कार महामंत्र एवं मंत्रोच्चार करने के पश्चात गुरु दर्शन यात्रा के लिए युवाओं ने बस द्वारा पुणे के प्रस्थान किया। प्रातः पूज्य प्रवर के विहार में सहभागिता कर गुरु दर्शन, प्रवचन, चारित्रात्माओं की सेवा - उपासना कर सायंकाल आचार्यप्रवर के चरण स्पर्श एवं मंगलपाठ का श्रवण कर पुनः मुंबई की ओर प्रस्थान किया। यात्रा को सफल बनाने में तेयुप व सभा पदाधिकारी गण, किशोर मंडल, एवं तेयुप सदस्यों का सहयोग प्राप्त हुआ।

प्रेक्षाध्यान से पाएं शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक बीमारियों से मुक्ति

पार्श्वनाथ सिटी।

साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में जोधपुर के पार्श्वनाथ सिटी में प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी प्राचीप्रभा जी द्वारा प्रेक्षाध्यान गीत के संगान से हुआ।

साध्वी जिनबाला जी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि प्रेक्षाध्यान में अनेक प्रकार के प्रयोग बताये गए हैं जिनके माध्यम से व्यक्ति शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक बीमारियों से मुक्ति पा सकता है। व्यक्ति अगर बहुत ज्यादा दुःखी है तो उसका मुख्य कारण भावनात्मक बीमारी है।

व्यक्ति अगर बहुत ज्यादा दुःखी है तो उसका मुख्य कारण भावनात्मक बीमारी है।

साध्वीश्री ने प्रेक्षाध्यान के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि जब हमारा स्वरयंत्र चंचल होता है तब हमारा मन भी चंचल होता है। प्रेक्षाध्यान के माध्यम से हम अपनी अनेक कमजोरियों को दूर कर सकते है।

साध्वी करूणाप्रभा जी ने श्वास लेने की सही प्रक्रिया का बोध देते हुए दीर्घश्वास के प्रयोग करवाए साथ ही विविध प्रकार की बीमारियों से निजात पाने के लिए विभिन्न मुद्राओं की जानकारी दी।

साध्वी भव्यप्रभा जी ने सहिष्णुता की अनुप्रेक्षा के प्रयोग करवाये। कार्यक्रम में जैन व जैनेत्तर समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

मुश्किल है पर नामुमकिन नहीं

कांदिवली, मुंबई।

'शासनश्री' साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल कांदिवली द्वारा मिशन 'अनुशीलन' के तहत कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी मृदुयशा जी ने नमस्कार महामंत्र से की। तत्पश्चात मंगलाचरण की प्रस्तुति दी गई।

मेन्टल हेल्थ के अंतर्गत प्रेक्षाध्यान में महाप्राण ध्वनि, समताल श्वास प्रेक्षा, मंत्र, मुद्रा, ध्यान जैसे रोचक प्रयोग प्रेक्षा प्रशिक्षिका मीनाक्षी बैद द्वारा करवाए गए। फिजिकल हेल्थ के अंतर्गत कैंसर अवेयरनेस प्रोग्राम 'मुश्किल है पर नामुमकिन नहीं' में तानिया सिन्हा एवं रीता सरावगी ने कैंसर पर अपनी जीत की कहानी अपनी जुबानी बताकर बहनों को प्रेरणा दी।

पदाधिकारियों द्वारा इन बहिनों का विशेष सम्मान किया गया। साध्वी प्रियंवदा जी एवं साध्वी ऋद्धियशा जी द्वारा श्रावक संबोध का महत्व समझाकर कंठस्थ ज्ञान की शुरुआत की गई। अध्यक्षा विभा श्रीमाल ने सभी का स्वागत करते हुए श्रावक संबोध कंठस्थ करने पर जोर दिया।

होली के त्यौहार की अग्रिम शुभ कामनाएं देते हुए क्रोध, मान, माया, लोभ जैसे कषायों का दहन करने के लिए छोटे-छोटे संकल्प लेने की प्रेरणा प्रदान करवाकर शुभ लेश्या ध्यान से अपने आभामंडल को पवित्र करने की मंगल कामना की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मोनिका पामेचा एवं आभार ज्ञापन मीना मेहता ने किया। संरक्षक, परामर्शक, मंत्री एवं संपूर्ण टीम का कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम में लगभग 40 बहनों की उपस्थिति रही। सभी बहनों ने यथासंभव सामायिक का लाभ लिया।

आध्यात्मिक होली का आयोजन

कोकराझार।

मुनि प्रशांतकुमार जी के सान्निध्य में आध्यात्मिक होली कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जनसभा को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांतकुमार जी ने कहा- जैन धर्म में होली के दिन चातुर्मासिक पक्खी होने से इसका अपना महत्व है। पुरानी बातें एवं वैर का विसर्जन कर उनको भूल जाएं, नया चिंतन करें, संबंधों में मधुरता लाएं।

जैन धर्म में चौमासी प्रतिक्रमण का अपना महत्व है, प्रतिक्रमण द्वारा आत्मशुद्धि करें। पापों की शुद्धि कर मन को हल्का बना लेना चाहिए। चार महीने के राग द्वेष, वैमनस्य को समाप्त कर नये ढंग से नया जीवन जिएं। काम, क्रोध, राग, द्वेष की होली जलाकर मन एवं आत्मा को पवित्र बनाएं। मुनिश्री ने मंगल भावना के साथ रंगों का ध्यान करवाया।

मुनि कुमुदकुमार जी ने कहा- भारतीय संस्कृति में मनाए जाने वाले प्रत्येक त्यौहार के साथ कोई न कोई घटना प्रसंग अवश्य जुड़ा हुआ है। वह प्रसंग हमें प्रेरणा प्रदान करता है। त्यौहार को ब्राह्य रुप में नहीं अपितु प्रेरणा के रुप में मनाया जाए।

रंग हमारे मन, चित्त, शरीर और व्यवहार को प्रभावित करते हैं। जैन दर्शन में लेश्या का अपना स्थान है, लेश्या से हमारा आभामंडल प्रभावित होता है। पवित्र आभामंडल हमारी साधना की सार्थकता है। हमारी आत्मा शुक्लमय बन जाए।

महिला मंडल के मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। सभा अध्यक्ष सुनील आंचलिया, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष विजय भूरा, सभा से किशनलाल नाहटा, ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी, कन्या मंडल, महिला मंडल किशोर एवं महिला मंडल ने गीत, कविता, वक्तव्य एवं नाटक के माध्यम से प्रस्तुति दी। आभार तेयुप मंत्री राजकुमार बोथरा ने किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री कन्हैयालाल चौपड़ा ने किया।

ज्ञानशाला, अणुव्रत समिति एवं कार्यकर्ताओं ने पाया सिंचन

नोएडा।

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में अणुव्रत समिति नोएडा के तत्वावधान में बोथरा भवन के प्रांगण में कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला, अणुव्रत समिति का शपथ-ग्रहण एवं ज्ञानशाला के नए सत्र का शुभारंभ, एक साथ त्रिआयामी कार्यक्रम आयोजित हुए। साध्वीश्री अणिमाश्रीजी ने अपने उद्बोधन में कहा- आज एक साथ तीन कार्यक्रम संयोजित हुए हैं। ज्ञानशाला गुरुदेव श्री तुलसी की महत्वपूर्ण देन है। यह ज्ञानशाला संस्कारों की शाला है। ज्ञानशाला से अर्जित संस्कार शुभ भविष्य का निर्माण करते हैं।

ज्ञानशाला के माध्यम से प्रशिक्षिकाएं नई पौध को सिंचन देने का सराहनीय श्रम कर रही है। यह पौध एक दिन विशाल शतशाखी बनकर समाज को शीतल छाया प्रदान करेंगे। नोएडा ज्ञानशाला नम्बर वन बनकर गण-गौरव की अभिवृद्धि करे, ऐसी मंगलकामना कर रही हूं। साध्वीश्री ने कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा- कार्यकर्त्ता संघ संगठन का सुयोग्य सेवक होता है। सामान्यतः काम करने वाला हर व्यक्ति कार्यकर्त्ता हो सकता है किन्तु वास्तव में कार्यकर्त्ता वह होता है, जो स्वार्थ से ऊपर उठकर परार्थ एवं परमार्थ पथ का पथिक बनकर समाज के लिए काम करता है। कार्यकर्त्ता वह होता है, जो श्रद्धाशील हो, चिन्तनशील हो, श्रमशील हो, सहनशील हो एवं चरित्रशील हो।

साध्वीश्री ने नवगठित अणुव्रत समिति के भीतर उत्साह का संचार करते हुए कहा गुरुदेव तुलसी का एक महत्वपूर्ण अवदान है- अणुव्रत। अणुव्रत इंसान को इंसान बनाने की कला सिखाता है। गुरुदेव तुलसी का एक सपना था कि हर व्यक्ति गुडमैन बने। अणुव्रत समिति गुरुदेव श्री तुलसी के स्वप्न को साकार करने का प्रयत्न कर रही है। अणुव्रत समिति नोएडा का गठन हुआ है। डॉ. आरती कोचर ने समिति की कमान संभाली है, सुघड़ टीम का गठन किया है। टीम के सहयोग से नए कीर्तिमान स्थापित करे। डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने मंच का कुशल संचालन करते हुए कहा जो व्यक्ति अपने मस्तिष्क में नकारात्मक विचारों का कचरा डालता है उसका मस्तिष्क कचरे का डिब्बा बन जाता है। कार्यकर्त्ता अपने मस्तिष्क को कचरे का डिब्बा न बनाए बल्कि शीतल जल का झरना बनाएं।

अणुविभा की संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुणिया ने नवचयनित डॉ. आरती कोचर को अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई एवं उनके एवं उनकी टीम के प्रति शुभकामना संप्रेषित की। अणुव्रत समिति की अध्यक्ष आरती कोचर ने अपनी नवगठित टीम की घोषणा की एवं साध्वीवृन्द के सान्निध्य में शपथ दिलाई। दिल्ली अणुव्रत समिति के अध्यक्ष मनोज बरमेचा, नोएडा सभाध्यक्ष रणधीर बैद, जीतो नार्थ जॉन के चेयरमैन बजरंग बोथरा आदि पदाधिकारियों ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं एवं ज्ञानार्थियों ने मंगल संगान किया। धृति व रियांस सुराणा ने चार गति पर सुन्दर एवं मार्मिक प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन कविता लोढ़ा ने किया।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा वर्ष 2024 हेतु नवीन घोषित चातुर्मास

मुनि हर्षलाल जी एवं मुनि यशवंतकुमार जी : जसोल
साध्वी कुन्दनरेखा जी : अणुव्रत भवन, दिल्ली
साध्वी सूरजप्रभा जी : टमकोर
साध्वी मंगलयशा जी : बालोतरा
साध्वी सत्यवती जी : फलसूण्ड
साध्वी ललितप्रभा जी : शास्त्रीनगर, दिल्ली (श्रावण, भाद्रपद)
मॉडल टाउन, दिल्ली (आश्विन,कार्तिक)
साध्वी रतनश्री जी : महरौली, दिल्ली
साध्वी संघमित्रा जी : ग्रीन पार्क, दिल्ली
साध्वी पीयूषप्रभा जी : पालघर, महाराष्ट्र
साध्वी रतिप्रभा जी : पचपदरा

अणुव्रत संपूर्ति समारोह के अंतर्गत अणुव्रत व्याख्यान माला का आयोजन

दादर (मुंबई)।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के सानिध्य में अणुव्रत अमृत महोत्सव सम्पूर्ति समारोह पर अणुव्रत व्याख्यानमाला एवं संयम दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों ने अणुव्रत गीत के द्वारा किया। मुख्य वक्ता प्रवक्ता उपासक डालचंद कोठारी ने अणुव्रत की पृष्ठभूमि बताते हुए विस्तार से अणुव्रत के बारे में बताया, तथा जीवन में अणुव्रतों को अपनाने की प्रेरणा दी। अणुव्रत समिति मुंबई अध्यक्ष रोशन मेहता ने संयम दिवस की उपयोगिता बताते हुए हर मंगलवार को संयम दिवस के निर्धारित 3 नियम स्वीकार कर ऑन लाइन फ़ार्म भरने की प्रेरणा दी।

मुनि कमलकुमार जी ने छोटे-छोटे उदाहरणों के द्वारा अणुव्रत के नियमों को समझाया एवं जीवन को अणुव्रतमय बनाने की प्रेरणा दी।

अष्टमाचार्य पूज्य गुरुदेव कालूगणी के जन्मदिवस के पावन अवसर पर उनकी स्मृति में स्वरचित गीत का संगान किया तथा पूज्य गुरुदेव को श्रद्धा पूर्वक याद करते हुए उनके जीवन पर प्रकाश डाला। मुनि श्री ने कहा कि पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा अणुव्रत यात्रा द्वारा नैतिकता, सदभावना एवं नशामुक्ति का संदेश प्रदान कर अणुव्रत को जन-जन तक पहुंचाने का महनीय कार्य किया है।

कार्यक्रम को सफल बनाने में अणुव्रत समिति मुंबई के कोषाध्यक्ष ख्यालीलाल कोठारी का विशेष योगदान रहा। अणुव्रत समिति मुंबई के मंत्री राजेश चौधरी आभार ज्ञापन ने किया।

"गुरुवर अभ्यर्थना" का लोकार्पण

पुणे। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल के तत्वावधान में तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा आयोजित "गुरुवर अभ्यर्थना" का आचार्य श्री महाश्रमण जी एवं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी के सानिध्य में पुणे में लोकार्पण हुआ।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के 50वें दीक्षा कल्याण महोत्सव के उपलक्ष्य में अभ्यर्थना हेतु कन्याएँ चित्रकला अथवा हस्तकला के माध्यम से गुरुदेव के जीवन दर्शन को प्रस्तुत करेगी। राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा, प्रधान ट्रस्टी पुष्पा बैंगानी ,महामंत्री नीतू ओस्तवाल, कन्या मंडल प्रभारी अदिति सेखानी, ट्रस्टी, सरंक्षिका, परामर्शक, पदाधिकारी व कार्यसमिति बहिनों के उपस्थिति में लोकार्पण किया गया।

अभिवंदना के स्वरों में एक स्वर आपका भी

युगप्रधान शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी के 50वें दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर करें अपने लेखन से अभिवंदना

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के

50वें दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता, 63वें जन्म दिवस, 15वें पदाभिषेक दिवस

के उपलक्ष में वंदनीय चारित्रात्माओं एवं पाठकगण की स्वरचित रचनाएं सादर आमंत्रित है।

- आप अपनी रचना आलेख (अधिकतम 300 शब्द) / कविता (अधिकतम 15 पंक्ति) / गीत (अधिकतम 5 पद्य/ 15 पंक्ति) / स्केच के रुप में भिजवा सकते हैं।
- कृपया एक व्यक्ति एक ही रचना भिजवाएं।
- आप अपनी रचना टाइप करवा कर या पीडीएफ फॉर्मेट में **15 अप्रैल 2024** तक **abtyptt@gmail.com** पर ईमेल करवा सकते हैं।
- प्रकाशन का सर्वाधिकार संपादक के पास सुरक्षित रहेगा।

:: निवेदक ::
अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

सार संभाल यात्रा

संघपति के प्रति समर्पण भाव से कार्य करने की मिली प्रेरणा

अहमदाबाद।

तेरापंथ युवक परिषद्, अहमदाबाद द्वारा 'सार संभाल महाअभियान के अंतर्गत' उत्तर अहमदाबाद सार संभाल यात्रा का सफल आयोजन मुनि मुनिसुव्रत कुमार जी स्वामी आदि ठाणा -3 के सानिध्य में मोटेरा, अहमदाबाद में हुआ। यात्रा का शुभारंभ मुनिश्री के मुखारबिंद से नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। तेयुप अध्यक्ष कपिल पोखरना ने अपने जोशीले वक्तव्य से युवाशक्ति में जोश भरते हुए सेवा-संस्कार-संगठन के विभिन्न कार्यों में जुड़ने के लिये आह्वान किया। मंत्री कुलदीप नवलखा ने युवाशक्ति के द्वारा कृत कार्यों के लिये साधुवाद करते हुए आगे भी निरंतर संघ समर्पित होकर कार्य करने की प्रेरणा दी। मुनि मुनिसुव्रत कुमार जी ने अपने उद्धबोधन से युवाशक्ति को अभातेयुप के त्रिआयामों 'सेवा-संस्कार-संगठन' में संघ-संघपति के प्रति समर्पण भाव से कार्य करने की प्रेरणा दी। मुनि श्री ने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव का आगामी 2025 का चातुर्मास अहमदाबाद में फरमाया हुआ है और भौगोलिक दृष्टि से उत्तर अहमदाबाद क्षेत्र चातुर्मास स्थल प्रेक्षा विश्व भारती, कोबा से सबसे निकटतम क्षेत्र है, इस क्षेत्र का एक भी युवक-किशोर गुरु सेवा के इस स्वर्णिम अवसर से वंचित ना रहे।

मुनिश्री ने युवाशक्ति को प्रेरणा देते हुए गीत का भी सामूहिक संगान करवाया। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, उत्तर अहमदाबाद के अध्यक्ष गणपत खतंग ने अपने वक्तव्य में युवाशक्ति को ज्यादा से ज्यादा संख्या में रास्ते की सेवा में जुडने के लिये प्रेरित किया और तेयुप अहमदाबाद के द्वारा किए गए कार्यों की खूब प्रशंसा की। तेयुप कार्यसमिति सदस्य दिलीप भंसाली ने अपने भावों से एवं अरिहंत बाफना ने अपने गीतों से संघ के लिये समर्पित होकर कार्य करने की प्रेरणा दी। किशोर मंडल प्रभारी अक्षय कोठारी, रवि बालर, मुदित छाजेड ने किशोर मंडल की जानकारी देते हुए क्षेत्र से किशोरों के जुडने का आह्वान किया। सार संभाल यात्रा में अहमदाबाद उत्तर क्षेत्र से 60 से भी अधिक युवाशक्ति की उपस्थिति रही। यात्रा में तेयुप अहमदाबाद से जुडने के लिये 13 नए सदस्यों के फॉर्म प्राप्त हुए। सार-संभाल यात्रा में अभातेयुप साथी अपूर्व मोदी, एमबीडीडी प्रभारी प्रकाश बैद एवं समाज के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री कुलदीप नवलखा एवं आभार ज्ञापन संगठन मंत्री आकाश भंसाली ने किया।

अणुव्रत के आचरण व अनुशीलन से स्वस्थ परिवार और स्वस्थ समाज का निर्माण संभव

जयपुर।

'शासन गौरव' बहुश्रुत साध्वी कनकश्रीजी के पावन सान्निध्य में अणुव्रत विश्व सोसायटी के तत्वावधान में अणुव्रत अमृत वर्ष सम्पूर्ति समारोह, अणुव्रत समिति जयपुर द्वारा आयाजित किया गया।

अणुविभा केन्द्र के महाप्रज्ञ सभागार में अणुव्रत जीवन शैली विषय पर आयोजित इस कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के पश्चात् तेरापंथ महिला मंडल जयपुर शहर की बहनों द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। साध्वीश्री ने संयमित जीवन शैली पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अणुव्रत एक ऐसा अमृत कलश है जिसका पान कर हम शांतिमय वातावरण बना सकते हैं। आचार्यश्री तुलसी ने अपने गुरु की स्मृति में आज के दिन तीन महान प्रवृत्तियों - धर्म को जीवन के साथ जोड़ने के लिए अणुव्रत, साध्वी शिक्षा हेतु पारमार्थिक शिक्षण संस्था एवं साहित्य प्रकाशन हेतु आदर्श साहित्य संघ की प्रतिष्ठा कर विकास की अनवरत धारा प्रवाहित कर दी। मानवता संयमित, संतुलित व अनुशासित हो यह आज की बड़ी जरूरत है। आचार्यश्री महाश्रमणजी अणुव्रत की त्रिपदी- 'सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति द्वारा देश में अहिंसक क्रांति का सूत्रपात कर रहे हैं। इस अमृत वर्ष में आन्दोलन ने नई गति पकड़ी है। अणुव्रत के आचरण व अनुशीलन से स्वस्थ परिवार और स्वस्थ समाज का निर्माण संभव है।

अणुव्रत इंटनेशनल कॉन्फ्रेंसे के कन्वीनर व आज के मुख्य प्रवक्ता डॉ. सोहन लाल गांधी ने अणुव्रत के इतिहास व अणुव्रत जीवन शैली को सहज सरल शब्दों में समझाया। आपने कहा- आचार्यश्री तुलसी के पास दिव्य दृष्टि थी, उन्होंने अणुव्रत प्रस्तुत कर अशांत विश्व को शांति का संदेश दिया।

अणुव्रत समिति जयपुर अध्यक्ष विमल गोलछा ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया तथा अणुव्रत अमृत वर्ष की विभिन्न गतिविधियों से अवगत कराया। उन्होंने सभी का स्वागत करते हुए समाज की विभिन्न संस्थाओं के सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। साध्वी मधुलता जी ने व्यंग्य कविता प्रस्तुत करते हुए वर्तमान जीवन की विसंगतियों पर प्रहार किया तथा अणुव्रत को युग-युग की जरूरत बताया। मंत्री डॉ. जयश्री सिद्ध व सौरभ जैन ने कार्यक्रम का सफल संयोजन किया।

सुरेश बरड़िया ने आभार ज्ञापन किया, संजय बैद द्वारा अणुव्रत उद्घोष से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

अणुव्रत एक ऐसा अमृत कलश है जिसका पान कर हम शांतिमय वातावरण बना सकते हैं।

संक्षिप्त खबर

संगठन यात्रा में युवकों को किया जुड़ने का आह्वान

तेयुप राजाजीनगर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद निर्देशित त्रि-यामी सूत्र सेवा-संस्कार-संगठन में संगठन के श्रेत्र में आगे बढ़ते हुए महालक्ष्मी लेआउट में संगठन यात्रा का आयोजन किया गया। बैठक की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना ने पधारे हुए सभी साथियों का स्वागत करते हुए धर्म संघ में और सगंठन में रहते हुए अपनी सेवाएं प्रदान करने का आह्वान किया। मंत्री कमलेश चौरड़िया ने त्रि-आयामी सूत्र सेवा-संस्कार-संगठन में करणीय कार्यों की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करते हुए युवकों को संघ से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। तेयुप परामर्शक चंद्रेश मांडोत एवं पूर्व मंत्री संतोष पोरवाड़ ने अपने विचार व्यक्त करते हुए सभी साथियों को धर्मसंघ और संगठन की महत्ता बताते हुए ज्यादा से ज्यादा जुड़ने के लिए प्रेरणा प्रदान की। इस अवसर पर तेयुप प्रबंध मंडल, कार्यकारिणी, तेयुप सदस्य एवं संगठन यात्रा के संयोजक विनोद कोठारी, आशीष मांडोत की उपस्थिति रही। संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री कमलेश चौरड़िया ने किया।

स्वदर्शन की यात्रा है प्रेक्षाध्यान

कोलकाता। मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में व्योम में प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा- जीवन का नाम है जागरुकता एवं जागरूकता का नाम है जीवन। नींद में सोया हुआ व्यक्ति तो जीता हुआ भी बेहोश ही लगता है। जागरुकता का दूसरा नाम ही है- ध्यान, जिसे हम द्रष्टा भाव कहते हैं। अपने को भूलकर पर से और पदार्थ में जब व्यक्ति अपनापन जोड़ता है तब वह बहिर्यात्रा करता है। प्रेक्षाध्यान स्वदर्शन की यात्रा है। मुनिश्री ने आगे कहा- ज्ञान वास्तव में वह है जो अभेद का दर्शन कराता है और स्व पर का भेद मिटाता है। मन का निर्विषयी हो जाना ध्यान है। ध्यान से सकारात्मक सोच का विकास होता है, स्मरणशक्ति बढती है, वृत्तियों का परिष्कार होता है, चरित्र का निर्माण होता है, व्यवहार स्वस्थ होता है। मुनि श्री ने आगे कहा ध्यान भारतीय संस्कृति की आत्मा है। भगवान महावीर ने ध्यान और तप के द्वारा केवल ज्ञान को प्राप्त किया । ध्यान विशिष्ट शक्ति है, ध्यान से योग भी पवित्र होते हैं। मुनिश्री ने ध्यान के प्रयोग करवाए। प्रेक्षा प्रशिक्षक, प्रशिक्षिकाओं ने संभागियों को प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यशाला में 65 संभागियों ने भाग लिया।

वीतराग पथ कार्यशाला

सिटी लाइट। तेरापंथ युवक परिषद् सूरत द्वारा वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन सिटी लाइट सूरत में साध्वी हिमश्री जी ठाणा 5 के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण के द्वारा की गई। साध्वी मुक्तियशा जी ने कहा कि हम छोटे-छोटे संकल्प करते हुए अपने जीवन में एक कदम वीतराग पथ की ओर बढ़ा सकते हैं। 'शासनश्री' साध्वी रमावती जी ने कहा कि यदि श्रावक बारहव्रत स्वीकार करते हैं, जप, तप, ध्यान में अपना समय व्यतीत करते हैं तो वीतराग पथ की ओर गतिमान होकर एक उच्च कोटि के श्रावक बन सकते हैं। साध्वी हिमश्री जी ने कहा कि यह पथ जितना दिखने में आसान लगता है उतना आसान है नहीं है। इसके लिए हमें हमारे मन को मजबूत करना होगा और अपने जीवन को संयमित करते हुए कुछ लक्ष्य निर्धारित करते हुए आगे बढ़ना पड़ेगा तब जाकर हम साधु मार्ग के जीवन में आ सकते हैं और मोक्ष की ओर अपना एक कदम बढ़ा सकते हैं। मंत्री श्रेयांस सिरोहिया के आभार ज्ञापन के पश्चात कार्यशाला संपन्न हुई।

तेरापंथ टाइम्स
ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

सीमित-परिमित और सारभूत हो हमारी भाषा : आचार्यश्री महाश्रमण

पुणे।
31 मार्च, 2024

आरोग्य, बोधि और समाधि का पथ प्रशस्त करने वाले अध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में वाणी एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा हमारे विचारों का आदान-प्रदान होता है। हमारे विचार वाणी-रूपी रथ पर आरुढ़ होकर बाहर जाते हैं। विचारों को वहन करने वाला तत्त्व भाषा होती है। भाषा पशुओं के पास भी होती है परन्तु मनुष्य के पास जो भाषा है, वह बहुत व्यापक है, विकसित है।

दुनिया में अनेकों भाषाएं चलती हैं। मेरा विचार है कि पूरी दुनिया में एक ही भाषा चलती, शास्त्र उसी एक ही भाषा में होते तो कितनी सुविधा हो जाती। आज के समय में अनेक भाषाएं सीखनी पड़ती हैं। भाषा मूल चीज नहीं है, मूल तो विषय है। विषय हमारा साध्य है, भाषा साधन है। अनेक भाषाओं को सीखने में कितना समय लगता होगा। एक ही भाषा हो तो अनुवाद की अपेक्षा ही नहीं रहती।

भाषा की अपनी उपयोगिता होती है। जो भाषा हमारे ज्यादा काम में आये वह भाषा उपयोगी है। भाषा की शक्ति मिलना भी अपने आप में विशेष बात होती है। ऐसे भी कई व्यक्ति होते हैं, जो स्पष्ट सुन या बोल नहीं पाते हैं।

जिनके पास भाषा की शक्ति है वे भाषा का प्रयोग कब, कैसे और किस रूप में करे? शास्त्रकार ने कहा- बिना पूछे मत बोलो। यदि हम बिना पूछे बोलें और उपयुक्त बात नहीं बोलें तो हमारा बोलना व्यर्थ सिद्ध हो सकता है। जहां जरूरी लगे वहां बीच में भी बोला जा सकता है। मौन करना अच्छा है तो बोलना भी अच्छा। बड़ी बात है बोलने और न बोलने में विवेक रखना।

वाणी के दो दोष हैं- एक कि बात को लंबा कर देना, दूसरा कि लंबी बात को भी निस्सार कर देना। वाणी के दो गुण हैं- सीमित-परिमित बोलना और सारभूत बोलना। ये दो बातें आदमी को वाक्-पटु बना सकती है।

झूठ न बोलें, बोलें तो सच बोले। हर सच बात बोलना भी जरूरी नहीं है। गृहस्थ भी मृषावर्जन का प्रयास करें। किसी पर झूठा आरोप न लगायें, झूठी गवाही न देवें।

क्रोध को भी असफल करें। मन में गुस्सा आ भी जाए पर वाणी पर गुस्सा न आये, गुस्सा आए तब मौन रखने का प्रयास करें। क्रोध में शरीर से भी कोई प्रतिक्रिया ना करें, जहां बैठे हों वह स्थान छोड़ दें। मन का पाप अलग है पर कम से कम वाणी या शरीर से पाप न हो।

प्रिय और अप्रिय स्थितियों में हम धैर्य-शांति रखें। समत्व भाव दोनों परिस्थिति में रखें। भाषा काम बना सकती है, तो बात बिगाड़ भी सकती है। परिवार में बात बिगड़ती दिखे तो उसे परोटने का प्रयास करें। ऐसा व्यवहार करें कि सामने वाले के मन की पीड़ा दूर हो जाये। प्रिय बोलने से लोग संतुष्ट होते हैं तो फालतू कड़वे वचन क्यों बोलें ? अच्छी, शिष्ट, शालीन भाषा बोलें। इष्ट और शिष्ट भाषा विशिष्ट बन सकती है। हमारा मानव जीवन कितना महत्वपूर्ण है। जीवन का क्षण-क्षण बीत रहा है। इसलिए हम धर्म के प्रति सजग रहें। हम सभी में अध्यात्म की चेतना जागरण होता रहे।

पूज्यप्रवर के मंगल प्रवचन से पूर्व साध्वीवर्या संबुद्धयशा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जन्म और मृत्यु के बीच का समय है जीवन। जीवन कैसे जीना ये हमारे हाथ में होता है। जीवन दो प्रकार से जीया जा सकता है: स्वतंत्र रूप में और परतंत्र रूप में। स्वतंत्रता का जीवन प्रतिक्रिया विरति का जीवन होता है। जहां हर बात पर प्रतिक्रिया होती है, वह परतंत्रता का जीवन होता है। जीवन में जहां क्रिया होती है, वहां प्रतिक्रिया भी होती है। हम नकारात्मक प्रतिक्रियाओं से बचने का प्रयास करें। स्वतंत्र जीवन जीना है तो हम दूसरे के हाथों की कठपुतली न बनें।

प्रवचन के उपरांत आचार्य प्रवर ने मुमुक्ष ऋजुल को भाद्रव शुक्ला नवमी तदनुसार 12 सितंबर 2024 को सूरत में साध्वी दीक्षा देने की घोषणा की। साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने आचार्यप्रवर के प्रातिभ पाटव के प्रति अपने विचार व्यक्त किये।

परम पावन की अभिवंदना में तेरापंथ युवक परिषद् पूना ने गीत की प्रस्तुति दी एवं परिषद् के सदस्यों ने पूज्य प्रवर से संकल्प स्वीकार किए। ज्ञानशाला की सुन्दर प्रस्तुति हुई।

ज्ञानार्थियों को भी पूज्यवर ने संकल्प स्वीकार करवाए। कन्या मंडल द्वारा चौबीसी व गुणस्थान की ढाल प्रस्तुत की गयी। तनसुखजी बैद ने अपनी कृति पूज्यवर के श्री चरणों में लोकार्पित की। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेश कुमारजी ने किया।

(पृष्ठ 12 का शेष)

सारभूत ज्ञान को ग्रहण...

साध्वी मंगलप्रज्ञाजी पहले समण श्रेणी में थी, वहां पर भी उच्च पद पर सेवा दी थी। समणी नियोजिका एवं जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट में वाइस चांसलर के रूप में सेवा दी थी। सभी साध्वियां ज्ञान दर्शन चरित्र तप के क्षेत्र में विकास करती रहें।

साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने अपने मन के भाव पूज्यवर के श्रीचरणों में अर्पित किए। सहवर्ती साध्वीवृंद ने गीत के संगान से अपनी भावना अभिव्यक्त की एवं भेंट स्वरूप विभिन्न रूपों में ज्ञानात्मक सामग्री आचार्य प्रवर को समर्पित की। तेरापंथ समाज पिंपरी चिंचवड़ की ओर से सुनील नाहर ने अपनी भावना अभिव्यक्त करते हुए आध्यात्मिक भेंट श्री चरणों में अर्पित की। अणुव्रत समिति पिंपरी चिंचवड़ की ओर से विकास छाजेड़ ने अपने विचार व्यक्त किए।

संयम और शांति...

पुण्य-पाप का फल आगे भी भोगना पड़ेगा। व्यक्ति हंस-हंस कर पाप कर्म का बंधन करता है पर रोने पर भी उन कर्मों के फल को भोगना पड़ेगा। इसलिए पाप कर्म करने से बचने का प्रयास करें।

हम धर्म के रास्ते पर चलें, संयम-शांति से जीवन जीएं व दूसरों के जीवन में भी बाधा नहीं डालें। यह बात कल्याणकारी हो सकती है। पूज्यवर के स्वागत में विमल सिंघी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। दुगड़ परिवार ने स्वागत गीत की प्रस्तुति दी। इन्दु दुगड़, मंगलचन्द दुगड़, निखिल दुगड़, नितेश दुगड़ ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पश्चिम महाराष्ट्र आंचलिक सभा के अध्यक्ष त्रिलोक चन्द्र बच्छावत, स्वामी समर्थ स्कूल के वैभव बाबर, अशोक पगलिया, प्रकाश गांधी ने भी अपने स्वागत स्वर प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

(पृष्ठ 2 का शेष)

मन की निर्मलता...

सामायिक साधना भी मन को निर्मल रखने की साधना है। तेरापंथ धर्मसंघ में शनिवार को सायं सात से आठ सामायिक चलती है। 50 की उम्र के बाद तो कम से कम रोज की एक सामायिक हो जानी चाहिए जिससे चेतना की निर्मलता बढ़े और आत्मोत्थान होता रहे। हमें मनुष्य जीवन प्राप्त है, इस प्राप्त का हम लाभ उठायें। हम समय को पहचान कर मानव जीवन का मूल्यांकन करते हुए अध्यात्म की साधना करने व मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करें। पूज्यप्रवर के स्वागत में संजय मरलेचा, मरलेचा परिवार की बहनें, भाग्यवंती मरलेचा, गीत मरलेचा, सुमन मरलेचा, एडवोकेट एस के जैन ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला की बालिकाओं ने अपनी प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि श्री दिनेश कुमारजी ने किया।

सारभूत ज्ञान को ग्रहण करने हो प्रयास : आचार्य श्री महाश्रमण

पिंपरी चिंचवड़।
25 मार्च, 2024

चातुर्मासिक पक्खी का पावन दिन, रंगों का त्योहार होली। अध्यात्म के रंगों की छटा बिखेरने वाले आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि अध्यात्म और व्यवहार के क्षेत्र में ज्ञान का बहुत महत्व है। सम्यक् ज्ञान प्राप्त होना एक उपलब्धि होती है। कोई भी कार्य करना हो, उस कार्य के सन्दर्भ में सम्यक् ज्ञान होता है, उसके अनुसार कार्य किया जाता है तो उस कार्य का सम्यक् सम्पादन हो सकता है। आचरण से पूर्व उसके सन्दर्भ में ज्ञान होना अपेक्षित होता है। अध्यात्म के क्षेत्र में बढ़ने वालों को यदि अहिंसा, मोक्ष, धर्म, तत्त्व आदि का सम्यक् ज्ञान होता है फिर सम्यक् क्रियान्विति होती है तो लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है।

ज्ञान को प्रथम स्थान दिया गया क्योंकि क्रिया से पहले ज्ञान चाहिए। पढमं नाणं तओ दया- पहले ज्ञान फिर

अपने-अपने क्षेत्र में उपयोगी ज्ञान के अध्ययन की दी प्रेरणा

दया अर्थात् आचरण। ज्ञान पूर्वक क्रिया सम्यक् क्रिया हो सकती है। ज्ञान और आचार दोनों का समन्वय होना आवश्यक है। ज्ञान अलग है, आचार अलग है। दुनिया में अध्यात्म भी है और विज्ञान भी है पर दोनों में समन्वय होना चाहिए। कहीं अध्यात्म विज्ञान को राह दिखाने वाला हो सकता है तो कहीं अध्यात्म की बातों को सिद्ध करने में विज्ञान सहायक बन सकता है। इसी प्रकार ज्ञान और आचार दोनों का जीवन में होना काम्य है।

स्वाध्याय करने से ज्ञान बढ़ता है। पर इसमें भी कुछ परिस्थितियां आ सकती है। पहली बात बताई गई है कि शब्द शास्त्र या ज्ञान अपार है। दूसरी बात यह कि व्यक्ति का समय और जीवन काल सीमित है। वर्तमान में तो 100 वर्ष भी पार के होने से सारे ग्रंथों को तो पढ़ना मुश्किल है, इसलिए सुझाव दिया गया कि जो सारभूत ज्ञान है उसको ग्रहण कर लो। दशवैकालिक आगम में साधु के लिए सारभूत बातें आई हैं। आचार्य शय्यंभव ने मुनि मनक के लिए सारभूत ज्ञान के रूप में दशवैकालिक आगम निर्यूढ़ किया था। ज्ञान तो अथाह है पर जो व्यक्ति जिस कार्य से जुड़ा है, वह उस विषय में निष्णात हो। अपने कार्य क्षेत्र के लिए कौनसा ज्ञान उपयोगी है, सारभूत है उसका अध्ययन होना चाहिए। सबके लिए सारभूत अलग-करने वाले सीमित होते हैं। हमारे धर्मसंघ में तो संभवतः एक रिकॉर्ड है कि साध्वी बिदामांजी 100 वर्ष पार करने वाले पहले चारित्रात्मा विद्यमान हैं।

तीसरी बात है कि जीवन काल तो सीमित है पर अनेक विघ्न बाधाएं व अन्य कार्य आ जाते हैं जिनसे ज्ञान प्राप्ति में अवरोध आ सकता है। इन तीन स्थितियों अलग हो सकता है।

कहा गया है-

जीव अजीव जाण्या नहीं, नहीं जाणी छः काय।
सूनै घर रा पावणा, ज्यूं आया त्यूं जाय।
जीव अजीव जाण्या सही, सही जाणी छः काय।
बसते घर रा पावणा, मीठा भोजन खाय।।

श्रावक को नव तत्त्वों का ज्ञान होना चाहिए। जो श्रावक जीव-अजीव को नहीं जानता है वह सूने घर के पाहुने के समान है। बताया गया है कि जो जीव-अजीव को जानता है, वह संयम को जानता है। हम धर्म के संदर्भ में यथार्थ को जानने का प्रयास करें। ग्रन्थों का ज्ञान करने से सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। कोई ज्ञान देने वाला मिल जाये, ज्ञान ग्रहण करने वाला मिल जाये और साथ में पुस्तक आदि ज्ञान की सामग्री हो, प्रतिभा हो तो प्रयास करने से ज्ञान का विकास हो सकता है।

अंधा व्यक्ति दर्पण में चेहरा नहीं देख सकता। चेहरा देखने के लिए आंखें और दर्पण दोनों चाहिए। इनके अतिरिक्त दर्पण पर आवरण भी न हो और देखने का प्रयास भी हो, चारों का योग होने पर दर्पण में देखा जा सकता है। खुद की प्रज्ञा नहीं हैं, तो शास्त्र पास में होने मात्र से ही भला होना संदिग्ध है। हम सम्यक् ज्ञान ग्रहण करने का प्रयास करें। पूज्यप्रवर ने होली के अवसर पर चैतन्य केंद्रों पर रंगों के साथ नमस्कार महामंत्र का जप करवाया।

आचार्य प्रवर ने आगे फरमाया- साध्वी मंगलप्रज्ञाजी का सिंघाड़ा चार चातुर्मास के अंतराल के बाद गुरुकुलवास में पहुंचा है। सभी साध्वियां खूब अच्छा काम करती रहे।

(शेष पृष्ठ 11 पर)

संयम और शांति से जीएं जीवन : आचार्यश्री महाश्रमण

बोसरी।
27 मार्च, 2024

अध्यात्म जगत के उज्ज्वल नक्षत्र धर्मगुरु धर्माचार्य आचार्यश्री महाश्रमणजी पिंपरी चिंचवड़ से लगभग 10 किमी का विहार कर बोसरी पधारे। पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि जैन दर्शन के अनेक सिद्धांत हैं- आत्मवाद एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। आत्मवाद से जुड़ा हुआ कर्मवाद भी एक सिद्धांत है। आत्मवाद और कर्मवाद इन दोनों से जुड़ा हुआ एक सिद्धांत है- पुनर्भववाद या पुनर्जन्मवाद।

आत्मा तो शाश्वत है, शरीर का नाश होता है। कर्मों से आवृत्त संसारी आत्मा हो या शुद्ध स्वरूप में स्थित सिद्धों की आत्मा हो, आत्मा अमर है। आत्मा अमर है, तभी पुनर्भव की बात हो सकती है। अगर शरीर के साथ आत्मा मरती है तो फिर पुनर्जन्म का सिद्धांत सही नहीं होता।

कई व्यक्तियों को अपने पिछले जन्म या जन्मों का ज्ञान भी हो सकता है। स्व-स्मृति हो जाए, कोई निमित्त मिल जाये, गहराई में आदमी जाता है तो पिछले जन्म की स्मृति हो सकती है। पूर्वजन्म है तो पुनर्जन्म भी हो जाता है। प्रश्न होता है कि आत्मा बार-बार क्यों जन्म लेती है? कहा

गया - क्रोध, मान, माया और लोभ ज्यादा तीव्र होते हैं, तो पुनर्जन्म की जड़ों का ये सिंचन करते हैं, आगे से आगे जन्म होता रहता है। जब ये कषाय क्षीण हो जाते हैं, उसके बाद कभी पुनर्जन्म नहीं होता है।

पुनर्जन्म के बारे में संदेह हो तो भी कम से कम अशुभ कार्य जीवन में मत करो, शुभ कार्य करो। सन्देह है कि पुनर्जन्म नहीं है, पर तुमने बुरे काम नहीं किए तो कोई नुकसान वाली बात नहीं है। यदि पुनर्जन्म है, और अच्छे काम किए हों तो आशा करें आगे भी अच्छा जन्म मिल सकता है। पुनर्जन्म है तो भी धर्म करना अच्छा और नहीं है तो भी धर्म करना अच्छा। नास्तिक विचारधारा का सिद्धांत रहा है कि जब तक जीओ अच्छा जीवन जीओ, उधार लेकर भी घी पीयो, मौज का जीवन जीओ। यह चार्वाक का सिद्धांत है, पर आस्तिकवाद कहता है कि आत्मा है, पुनर्जन्म है।

(शेष पृष्ठ 11 पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक - **दिनेश मरोठी**